mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-158 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

10 जून 2025 मंगलवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

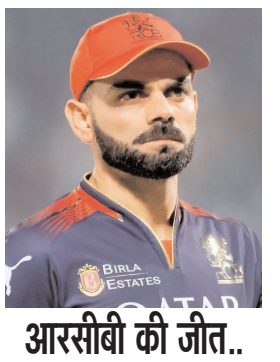

आरसीबी की जीत..
@ पेज 7

राजा रघुवंशी की हत्या के लिए सोनम ने रची थी खतरनाक साजिश

मदुरै (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के इंदौर के कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या में उसकी पत्नी सोनम, पत्नी के प्रेमी राज समेत पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। शादी के बाद राजा रघुवंशी अपनी पत्नी सोनम के साथ हनीमून ट्रिप

● प्रेमी राज समेत पांच आरोपियों किया गिरफ्तार

पर मेघायल के शिलांग गया था, जहां से 23 मई को दोनों लापता हो गए। इसके बाद 2 जून को राजा की लाश बरामद हुई, लेकिन पत्नी सोनम का कुछ पता नहीं चला। इसके बाद कई राज्यों में सोनम की तलाशी शुरू की गई। इस मामले में नया मोड़ तब आया, जब सोनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में एक ढाबे पर मिली, जहां से उसे हिरासत में लिया गया। सोनम की गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने खुलासा किया कि पत्नी ने ही अपने प्रेमी के साथ मिलकर राजा रघुवंशी के कत्ल की साजिश रची थी।

राजा रघुवंशी की हत्या की साजिश राज कुशवाहा और सोनम ने मिलकर रची थी। इस हत्याकांड को अंजाम देने के लिए राज ने सुपारी किलर्स को हायर किया। राज कुशवाहा ने शिलांग में हत्याकांड को अंजाम देने के लिए आकाश, विशाल और आनंद नामक सुपारी किलर्स को हायर किया था। हालांकि, राज खुद शिलांग नहीं आया, लेकिन वह फोन के जरिए सोनम के संपर्क में था। राज कुशवाहा फोन पर सब-कॉर्डिनेट कर रहा था।

सोनम ने साजिश के तहत राजा रघुवंशी को जानबूझकर एक सुनसान सड़क पर लेकर गई। सुनसान सड़क पर पहुंचते ही तीनों हत्यारों ने तेज धार वाले हथियार से राजा रघुवंशी की हत्या कर दी। हत्याकांड को अंजाम देने के बाद आकाश, विशाल, आनंद और सोनम चारों शिलांग से गुवाहाटी पहुंचे। ये सभी एक दिन गुवाहाटी में रुके। इसके बाद चारों अलग-अलग जगह के लिए निकल गए। हत्याकांड को अंजाम देने के बाद सभी आरोपियों का अगला ठिकाना चेरापूंजी पहुंचने का था।

पुलिस के मुताबिक, राजा का 2 जून को शव बरामद हुआ और विशेष जांच टीम (स्ढ्ढञ्ज) का गठन किया गया। सूत्रों के मुताबिक, जांच के दौरान पुलिस को जानकारी मिली कि सोनम जिंदा है और हत्या में उसकी संलिप्तता हो सकती है। पुलिस ने जब सोनम की कॉल डिटेल्स निकाली तो पुलिस को पता चला कि सोनम लगातार राज कुशवाहा के संपर्क में थी। दोनों पहले से एक-दूसरे को जानते थे और उनके बीच प्रेम संबंध भी था।

टेक्निकल एविडेंस और सीसीटीवी फुटेज की जांच के बाद पुलिस सबसे पहले ललितपुर पहुंची, जहां से आकाश राजपूत को गिरफ्तार किया गया। इसके बाद विशाल और राज कुशवाहा को इंदौर से गिरफ्तार किया गया। सोनम को गाजीपुर से पुलिस ने पकड़ा। पांचवां आरोपी आनंद सागर से गिरफ्तार हुआ। अब इन सभी आरोपियों को शिलांग लाया जाएगा, जहां कोर्ट में पेशी के बाद पुलिस उनकी रिमांड लेगी।

संक्षिप्त समाचार

एलियन और यूएफओ के रहस्यों से उठ गया पर्दा

अमेरिका (एजेंसी)। एरिया 51 के लेकर अमेरिका में हमेशा से रहस्य बना रहा है। यह कैसा है? अमेरिकी सेना यहां क्या करती है? इसके बारे में किसी को जानकारी नहीं है। लेकिन, अब जो रिपोर्ट सामने आई है वो हैरान करने वाली है। अमेरिकी सेना ने दशकों तक अज्ञात उड़ने वाली वस्तुओं (स्नह्व) के बारे में जनता और यहां तक ??कि अपने कर्मियों को भी गुमराह किया है। यह खुलासा ऐसे समय में हुआ है जब यूएफओ के मुद्दे ने हाल के वर्षों में दुनिया भर में काफी दिलचस्पी पैदा की है। वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार, अमेरिकी रक्षा विभाग (ष्ठह्वष्ठ) के ऑल-डोमेन एनोमली रेजोल्यूशन ऑफिस ने पाया है कि अमेरिकी सेना ने गुप्त परियोजनाओं को छिपाने के लिए यूएफओ के मिथकों का जाल

बुना है। अमेरिकी सेना ने जनता, अपने कर्मियों और यहां तक कि अधिकारियों को गुमराह किया। हाल के वर्षों में, यूएफओ के बारे में कई कहानियों ने ध्यान आकर्षित किया है लेकिन, अब इनसे पर्दा उठ गया है। जर्नल ने बताया है कि यूएफओ के बारे में कई लोकप्रिय कहानियां दशकों में गढ़ी गई हैं। अमेरिकी सेना द्वारा शीर्ष गुप्त सैन्य कार्यक्रमों को गुप्त रखने के लिए ऐसी कहानियां गढ़ी गई थीं। उदाहरण के लिए, 1980 के दशक में, एक अमेरिकी वायु सेना के अधिकारी ने एरिया 51 बेस के पास एक पब-मालिक को उड़न तश्तरियों की कुछ तस्वीरें दीं। इससे एरिया 51 में एलियन यूएफओ के बारे में लोगों में एक तरह की धारणा विकसित हुई। वास्तव में ये तस्वीरें नकली थीं। लेकिन, अमेरिका सेना ने ऐसा इस वजह से किया था कि ताकि यह तथ्य छिपाया जा सके कि अमेरिकी सरकार एरिया 51 में गुप्त लड़ाकू विमान विकसित कर रही है।

रूस ने यूक्रेन पर किया बहुत बड़ा हमला, एक रात में दागे 479 ड्रोन, मचा दी तबाही

कीव (एजेंसी)। रूस और यूक्रेन के बीच जंग जारी है। रूस ने हाल के दिनों में यूक्रेन पर हमले तेज कर दिए हैं। इस बीच यूक्रेनी वायु सेना ने सोमवार को कहा कि रूस ने जंगध के दौरान एक रात में सबसे बड़ा ड्रोन हमला किया है। रूस की ओर से इस हमले में बमबारी के लिए 479 ड्रोन का इस्तेमाल किया गया है। यूक्रेनी वायु सेना के अनुसार, ड्रोन के अलावा यूक्रेन के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार की 20 मिसाइलें भी दागी गई हैं। यूक्रेनी वायु सेना

ने कहा कि हमले के दौरान मुख्य रूप से यूक्रेन के मध्य और पश्चिमी क्षेत्रों को निशाना बनाया गया। वायु सेना के एक बयान में कहा गया है कि यूक्रेन की वायु रक्षा प्रणाली ने 277 ड्रोन और 19 मिसाइलों को हवा में ही नष्ट कर दिया। बयान में दावा किया गया कि केवल 10 ड्रोन या मिसाइल ही अपने लक्ष्य तक पहुंच सके। यूक्रेन के इस दावे की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं की जा सकी है। रूस के हवाई हमले आमतौर पर देर शाम को शुरू होते हैं और सुबह खत्म होते हैं, क्योंकि अंधेरे में ड्रोन को पहचानना मुश्किल होता है। रूस ने तीन साल से ज्यादा समय से जारी जंग के दौरान लगातार यूक्रेन के नागरिक इलाकों में शाहिद ड्रोन से हमला किया है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, इन हमलों में 12,000 से अधिक यूक्रेनी नागरिक मारे गए हैं। रूस का कहना है कि वह सिर्फ सैन्य ठिकानों को निशाना बनाता है।

कैंची धाम जाने वाले रूट में लगा कई किलोमीटर लंबा जाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीम करोली बाबा के धाम जाने की सोच रहे भक्तों के लिए जरूरी खबर सामने आई है। भक्तों की भारी संख्या के कारण कैंची धाम रोड पर लंबा जाम लग चुका है। ऐसे में कैंची धाम जाने वाले भक्त अपना कोई प्लान ट्रैफिक अपडेट देखने के बाद ही करें। पिछले कई घंटों से नैनीताल-भवाली रोड पर गाड़ियों की कतारें लगी हुई हैं और लोग कैंची धाम नहीं पहुंच पा रहे हैं। जो कैंची धाम जाना चाह रहे हैं उनकी गाड़ियों को भवाली सेक्टोरियम के पास ही पार्किंग में रोक लिया गया है। यहां से भक्तों को कई किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ रहा है।

इतनी भारी संख्या में लोगों के कैंची धाम पहुंचने का एक बड़ा कारण गर्मी का मौसम तो है ही साथ ही कैंची धाम में लगने वाला मेला भी है। हर साल 15 जून की तारीख से नीम करोली बाबा के कैंची धाम आश्रम में मेला लगता है। इस मेले में शामिल होने के लिए देश-विदेश से बड़ी संख्या में लोग कैंची धाम पहुंचते हैं। आपको बता दें कि 15 जून कैंची धाम का स्थापना दिवस है। इस कारण हर साल यहां मेला लगता है।

राहुल गांधी ने चुनाव आयोग से फिर पूछा सवाल

'ECI का अच्छा कदम, लेकिन कब तक मिलेगा डाटा'

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सोमवार को चुनाव आयोग से पूछा कि वह महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनावों की मतदाता सूची कब तक उपलब्ध कराएगा? बता दें कि चुनाव आयोग ने कथित तौर पर हरियाणा और महाराष्ट्र के लिए 2009 से 2024 तक मतदाता सूची डेटा साझा करने का फैसला किया। एक्स पर एक पोस्ट में राहुल ने चुनाव आयोग के फैसले का स्वागत किया। उन्होंने कहा, ÷मतदाता सूची सौंपने के लिए चुनाव आयोग द्वारा उठाया गया पहला अच्छा कदम है। क्या चुनाव आयोग सटीक तारीख की घोषणा कर सकता है, जब तक यह डेटा सौंप दिया जाएगा?

बता दें कि राहुल गांधी ने एक मीडिया रिपोर्ट का स्क्रीनशॉट एक्स पर शेयर करते हुए यह सवाल किया है। स्क्रीनशॉट में दावा किया गया है कि निर्वाचन आयोग ने वर्ष 2009 से 2024 तक हरियाणा और महाराष्ट्र के लिए मतदाता सूची का डेटा साझा करने का रास्ता साफ कर दिया है।

इसमें कहा गया है कि निर्वाचन आयोग ने इससे पहले मौजूदा साल की शुरुआत में दिल्ली उच्च न्यायालय को इस संबंध में आश्वासन दिया था। हालांकि, कथित कदम को लेकर निर्वाचन आयोग की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की गई है।

बता दें कि राहुल गांधी ने पिछले साल हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली का आरोप लगाया था। इस पर निर्वाचन निकाय के सूत्रों ने रविवार को कहा कि संवैधानिक निकाय केवल तभी जवाब देगा जब नेता प्रतिपक्ष इसे ऑफिसियली लिखेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि संपर्क बढ़ाने के तहत निर्वाचन आयोग ने सभी छह राष्ट्रीय दलों को अलग-अलग बातचीत के लिए आमंत्रित किया था। उन्होंने कहा कि पांच दलों के नेता निर्वाचन आयोग के अधिकारियों से मिले, लेकिन कांग्रेस ने 15 मई की बैठक रद्द कर दी थी।

हालांकि निर्वाचन आयोग के सूत्रों की ओर से महाराष्ट्र चुनाव में धांधली के राहुल के आरोपों को खारिज कर दिया गया था। इसके बाद राहुल गांधी ने शनिवार को निर्वाचन आयोग पर दोबारा हमला बोलते हुए कहा था कि चोरी से नहीं बल्कि सच से इसकी विश्वसनीयता की रक्षा होगी। राहुल गांधी ने महाराष्ट्र चुनाव में 'मैच-फिक्सिंग' का आरोप लगाया था और दावा किया था कि यही आगामी बिहार चुनाव में और हर उस जगह होगा जहां कहीं भी भाजपा हार रही है।

दिल्ली के मेट्रो स्टेशन पर लगी आग

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के त्रिलोकपुरी संजय लेक मेट्रो स्टेशन के सर्वर रूम में सोमवार को आग लग गई। इससे मेट्रो स्टेशन में यात्रियों के बीच अफरा-तफरी का माहौल हो गया। मेट्रो स्टेशन के अधिकारी भी काफी परेशान हो गए। एक अधिकारी ने बताया कि अग्निशमन विभाग को सोमवार सुबह 11 बजकर 10 मिनट पर आग

लगने के बारे में सूचना दी गई थी। मेट्रो स्टेशन के सर्वर रूम में ये आग संभवतः शॉर्ट सर्किट के कारण लगी थी। उन्होंने बताया, सूचना मिलने के बाद हमने दमकल की चार गाड़ियां मौके पर भेजीं गईं। दोपहर एक बजकर 10 मिनट तक आग पर काबू पा लिया गया। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। वहीं, दूसरी ओर रविवार देर रात दिलशाद गार्डेन के कोड़ी कॉलोनी में आग की घटना सामने आई थी। ये आग ई-रिक्शा की चार्जिंग स्टेशन में लगी थी। इस आग के हादसे में 2 लोगों की जान चली गई थी। इस दौरान दो ई-रिक्शा और एक बाइक भी जलकर खाक हो गई थी। वहीं, अप्रैल महीने में आईएनए के दिल्ली हाट में आग लगने से कई दुकानें जलकर राख हो गई थीं। इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ था। दिल्ली सरकार ने पीड़ित कारीगरों को सहायता का भरोसा दिया दिया था।

सिक्किम में हनीमून पर गया एक और नवविवाहित जोड़ा लापता

11 दिन से दोनों का कोई सुराग नहीं मिला

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के सोनम और राजा के बाद सिक्किम में हनीमून पर गया एक और नवविवाहित जोड़ा लापता हो गया है। 11 दिन से दोनों का कोई सुराग नहीं मिला है। राजा और सोनम मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। राजा का शव पहले ही बरामद हो गया था। अब सोनम भी सही सलामत यूपी के गाजीपुर में मिल गई है। वहीं, यूपी के प्रतापगढ़ जिले के नवविवाहित दंपति कौशलेंद्र प्रताप सिंह और अंकिता सिंह का अब तक कोई पता नहीं चल सका है। परिजनों का कहना है कि अब तक एक चप्पल तक नहीं मिला। लालगंज तहसील क्षेत्र के राहाटीकर गांव के रहने वाले कौशलेंद्र और अंकिता हनीमून पर सिक्किम गए थे। दोनों जिस वाहन में सवार थे। वह 29 मई को हादसे का शिकार हो गया था और 1000 फीट गहरी खाई में गिर गया था। इस हादसे को 11 दिन हो चुके हैं, लेकिन दोनों की कोई खबर नहीं मिली है। इस वाहन में सवार दो लोगों का रेस्क्यू किया गया है। इनमें से एक सामान्य वार्ड और दूसरा आईसीयू वार्ड में भर्ती है। इन लोगों ने भी पुष्टि की है कि कौशलेंद्र और अंकिता इनके साथ ट्रैवलर में मौजूद थे।

सर्च ऑपरेशन में जुटी टीम को ट्रैवलर में सवार लोगों के कई सामान मिले हैं, लेकिन इनमें से कोई भी सामान

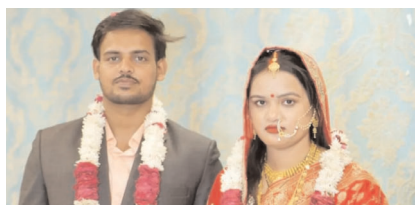

कौशलेंद्र या अंकिता का नहीं है। कौशलेंद्र के पिता शेर बहादुर सिंह ने सोशल मीडिया के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से अपील की है कि रेस्क्यू ऑपरेशन में तेजी लाई जाए। उनका कहना है ÷अब तक जितने भी सामान, कपड़े, जूते, घड़ी, चश्मा, बैग निकाले गए हैं, उनमें से कोई भी मेरे बेटे या बहू का नहीं है। जब तक मैं उन्हें खोज नहीं लेता, सिक्किम नहीं छोड़ूंगा।÷ उन्होंने देशवासियों से भी भावनात्मक अपील की कि वे दंपति की सकुशल वापसी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

परिजनों ने बताया कि कौशलेंद्र और अंकिता की शादी अभी 5 मई को ही हुई थी और दोनों 25 मई को हनीमून पर सिक्किम गए थे। पट्टी के छिवलहा गांव के रहने वाले अंकिता के पिता विजय सिंह डब्बू भी सरकार से उम्मीद की आस लगाए बैठे हैं।

सीधी में नदी नहाने गये तीन भाइयों में दो डूबे

एक का शव मिला, दूसरे की तलाश जारी, तीसरा किसी तरह बचा

सीधी (एजेंसी)। सीधी जिले में भंवरसेन इलाके की सोन नदी का किनारा सोमवार सुबह चीखों से गूंज उठा, जब एक ही परिवार के दो बेटों ने नदी की गहराई में दम तोड़ दिया। अपने सामने दोनों भाइयों को डूबते देख ना बचा पाने की बेबसी के साथ तीसरे भाई दीपक द्विवेदी की आंखें भीग गई। वह बार-बार यही दोहरा रहा था- ÷मैं बस देखता रहा, कुछ नहीं कर सका। मुझे तैरना नहीं आता। मदद मांगने के बाद भी कोई बचाने नहीं आया।

पुलिस के मुताबिक, तीनों रिश्ते में चचेरे और मौसेरे भाई हैं। कुशमहर गांव में आसपास ही रहते हैं। पुलिस के मुताबिक, विजय अग्निहोत्री, अमित पांडे और दीपक द्विवेदी सोमवार सुबह 10 बजे घर से निकले थे। दोपहर 12 बजे के आसपास सभी नहा रहे थे, तभी नहाते-नहाते तीनों गहराई में चले गए।

दीपक किसी तरह किनारे तक पहुंचने में सफल रहा, लेकिन उसके दोनों भाई नदी में समा गए। दीपक ने बताया, ÷हममें से किसी को तैरना नहीं आता था। मैंने पापा

को फोन किया है। बस अब सब खत्म हो गया।

सूचना मिलते ही रामपुर नैकिन थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। स्थानीय गोताखोरों ने विजय अग्निहोत्री का शव निकाला। वहीं अमित पांडे लापता है। एसडीईआरएफ की टीम उसकी तलाश कर रही है।

22 वर्षीय अमित पांडे इंदौर में आईपीएस और 26 वर्षीय विजय अग्निहोत्री इंदौर में ही बैंकिंग की तैयारी कर रहा था।

सरकार बनने पर 2 हजार रुपए पेंशन देंगे

प्रशांत किशोर का बड़ा बयान

बेगूसराय (एजेंसी)। जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने बिहार के बेगूसराय में बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा, नीतीश कुमार पेंशन के नाम पर 400 रुपए दे रहे हैं। अगर कोई भिखारी सड़क पर भीख मांगता है तो उसे भी 400 रुपए महीने से ज्यादा मिलते होंगे। महंगाई के इस दौर में वो 400 रुपए दे रहे हैं। इसलिए तय हुआ कि छठ के बाद जब जनता की सरकार बनेगी तो दिसंबर 2025 से 60 साल से ज़्यादा उम्र के हर पुरुष और महिला को 2000 रुपए पेंशन ज़रूर दी जाएगी। प्रशांत किशोर ने कहा, इस बार जब बिहार के लोग छठ पर घर आएंगे तो प्रशांत किशोर का वादा है कि 10-12 हजार रुपए के लिए तुम्हें दूसरे राज्यों में नहीं जाना पड़ेगा। दूसरा संकल्प ये है कि अगर जनता की सरकार बनी तो जिसकी उम्र 60 साल से ज्यादा है, उसे 2 हजार रुपए पेंशन देंगे।प्रशांत किशोर ने कहा, जीवन तब

सुधरेगा, जब आपके बच्चों के लिए पढ़ने की व्यवस्था हो। जब तक बच्चे पढ़ेंगे नहीं, तब तक आप गरीबी से नहीं निकल सकते। हर गरीब को ये सुविधा होगी कि आप अपने बच्चे को प्राइवेट स्कूल में पढ़ाएं। इसकी फीस सरकार भरेगी।

इससे पहले जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने बिहार विधानसभा चुनाव में सभी 243 सीटों पर अपनी पार्टी के चुनाव लड़ने का ऐलान किया था। बिहार के खगड़िया में एक जनसभा को संबोधित करते हुए प्रशांत किशोर ने ये ऐलान किया।

उन्होंने कहा, हम 243 सीटों पर चुनाव लड़ रहे हैं। जिसको जितनी सीटों पर चुनाव लड़ना है, वह लड़े। कौन सी पार्टी कितनी सीटों पर चुनाव लड़ रही है, इससे जनता को कोई लेना-देना नहीं है।

प्रशांत किशोर ने चिराग पासवान और दूसरे नेताओं पर सीधा हमला बोलते हुए कहा, उन्हें यह बताना चाहिए कि बिहार में बच्चों की शिक्षा कैसे होगी, बिहार से पलायन कैसे रुकेगा और बिहार में भ्रष्टाचार कैसे रुकेगा? उन्होंने कहा कि जनता ने एनडीए और यूपीए दोनों के शासन को देख लिया है। गौरतलब है कि बिहार में इस साल के आखिर में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं।

चलती बस से उतरा युवक, उसी के नीचे दबकर कुचला गया

झुंझुनूं (एजेंसी)। राजस्थान के झुंझुनूं में एक युवक की लापरवाही उसकी दर्दनाक मौत का कारण बनी। मृतक युवक ने चलती बस से नीचे उतरने की कोशिश की, लेकिन संतुलन बिगड़ने से बस के नीचे चला गया। बस के पिछले पहिए की चपेट में आने से उसकी मौत हो गई। घटना का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है। घटना झुंझुनूं जिले के नवलगढ़ कस्बे की है। यहां रविवार शाम हुए एक दर्दनाक हादसे में झुंझुनूं निवासी युवक की जान चली गई। घटना उस समय हुई जब युवक रोडवेज बस से उतर रहा था। अचानक संतुलन बिगड़ने से वह बस के पिछले टायर के नीचे आ गया। जानकारी के अनुसार, झुंझुनूं निवासी समीर पुत्र इमरान नवलगढ़ में किसी कार्य से आया था। चलती बस से जब वह नीचे उतर रहा था, तभी युवक का संतुलन बिगड़ा और वह बस के पिछले पहिए से कुचला गया।

सरकारी अस्पतालों में 3 घंटे ओपीडी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में सुबह 9:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक ओपीडी संचालित होगी। इस सम्बन्ध में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ.प्रभाकर तिवारी ने 8 जून को ओपीडी में नियमित दिवसों की भांति सभी सेवाएं देने का आदेश जारी किया है। दो दिवस निरंतर अवकाश होने की स्थिति में द्वितीय अवकाश के दिन ओपीडी संचालित किए जाने के संबंध में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा निर्देश दिए गए हैं। लगातार दो दिन के अवकाश होने के कारण मरीजों को उपचार लेने में असुविधा न हो, इसे देखते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भोपाल द्वारा 3 घंटे की ओपीडी संचालित रखने के निर्देश दिए जारी किए गए हैं। चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ को भी ड्यूटी पर उपस्थित रहने के लिए निर्देशित किया गया है।

मनाया बावड़ी उत्सव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद विकासखंड बैरसिया जिला भोपाल द्वाराबैरसिया के शिवाजी चौक, मां कालका मंदिर के पास स्थित वार्ड क्रमांक-09 में श्री बिहारी सिंह, श्री फतेह सिंह की लगभग 200 वर्ष प्राचीन धरोहर में बावड़ी उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर श्रमदान और साफ-सफाई के पश्चात श्री नर्मदा जी का पूजन अर्चन कर बावड़ी में दीप प्रज्वलन और आकर्षक रंगोली बनाकर साज सज्जा की गई। विकासखंड समन्वयक श्री मुकेश गौर ने बताया कि मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के नेतृत्व में चलाए जा रहे जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत विश्व पर्यावरण दिवस पर संपूर्ण प्रदेश में बावड़ी उत्सव मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी श्री राजीव कुमार शर्मा, नवांकुर संस्था से अश्विनी गोस्वामी प्रेम कुशवाहा, अर्जुन मालवीय, विजयराम नरेंद्र सिंह, परामर्शदाता मुकेश माहेश्वरी, रवींद्र सोनिया, सुशील पंड्या, पूजा त्यागी, कालूराम सहित बड़ी संख्या समिति सदस्य, छात्र और ग्रामीणजन सम्मिलित हुए।

निगम को 25 साल तक 4.20 रुपए प्रति यूनिट मिलेगी बिजली... इंदौर से दो रुपए सस्ती

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल नगर निगम की सौर ऊर्जा योजना काफी किफायती साबित हुई है। निगम को अगले 25 सालों तक सिर्फ 4.20 रुपए प्रति यूनिट की दर से बिजली मिलेगी। यह उपलब्धि नीमच में स्थापित किए जा रहे चार सौर ऊर्जा संयंत्रों के जरिए संभव हुई है। इनमें से एक संयंत्र शुरू भी हो चुका है। योजना यदि पूरी तरह सफल रही तो इसे प्रदेश के सभी प्रमुख नगर निगमों में लागू करने का विचार है।

गौरतलब है कि भोपाल नगर निगम को प्रति यूनिट बिजली इंदौर से 2 रुपए सस्ती मिल रही है। इंदौर नगर निगम को 6 रुपए प्रति यूनिट की दर से बिजली मिल रही है। इसकी वजह यह है कि भोपाल नगर निगम ने संयंत्र निर्माण की लागत को कम करने के लिए शुरू से ही रणनीतिक उपाय अपनाए। छोटे-छोटे तरीकों से खर्च को कम रखा गया। भोपाल नगर निगम का पहला 10 मेगावाट का

संयंत्र 18 मई को चालू हो चुका है। इससे नगर निगम को 3.20 रुपए प्रति यूनिट की दर से बिजली मिलने लगी है। अन्य खर्च जोड़ने के बाद यह दर 4.20 रुपए प्रति यूनिट हो जाती है। योजना के तहत कुल चार संयंत्र दो 10-10 मेगावाट और दो 10.5-10.5 मेगावाट क्षमता के लगाए जाएंगे।

भोपाल निगम 41 मेगावाट के इन चार संयंत्रों पर कुल 164 करोड़ रुपए खर्च कर रहा है। एक संयंत्र पर 41 करोड़ की लागत आएगी। छोटे संयंत्रों और कम लागत के कारण बिजली उत्पादन पर खर्च कम है।

इंदौर निगम ने 60 मेगावाट उत्पादन का लक्ष्य रखा है, जिसके लिए 350 करोड़ का प्रोजेक्ट तैयार किया है। बड़े संयंत्रों के कारण वहां लागत ज्यादा आई, जिससे प्रति यूनिट उत्पादन लागत 6 रुपए से अधिक हो गई।

पहला चरण शुरू- निगमायुक्त हरेंद्र नारायण का कहना है, पहले चरण में 10 मेगावॉट का प्रोडक्शन शुरू हो गया है। दूसरे चरण में दो संयंत्रों को 15 अगस्त तक शुरू करने का लक्ष्य है।

लागत कम करने की रणनीति... अधिकारियों के अनुसार, संयंत्र की क्षमता 10 मेगावाट के आसपास रखने से इन्फ्रास्ट्रक्चर की लागत कम होती है। इससे बिजली उत्पादन सस्ती दरों पर संभव हुआ। अगर संयंत्र की क्षमता बढ़ाई जाती, तो इन्फ्रास्ट्रक्चर की लागत दोगुनी हो जाती और बिजली महंगी पड़ती।

मिशन कर्मयोगी में नगरीय प्रशासन एवं विकास के 43 हजार से अधिक अधिकारी-कर्मचारी पंजीकृत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में राष्ट्रीय मिशन कर्मयोगी की अवधारणा और कार्य-प्रणाली को ध्यान में रखकर राज्य सरकार ने क्षमता निर्माण नीति तैयार की है। इस नीति में प्रत्येक विभाग के बजट में मिशन कर्मयोगी के लिये बजट का एक प्रतिशत आरक्षित किया गया है। इस व्यवस्था से कर्मचारियों और अधिकारियों के प्रशिक्षण और क्षमता विकास के लिये आवश्यक संसाधन सुनिश्चित हो रहे हैं। यह व्यवस्था संचालनालय नगरीय प्रशासन एवं विकास में भी लागू की गयी है। मिशन कर्मयोगी डिजिटल पोर्टल पर अब तक 43 हजार से अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों को पंजीकृत किया जा चुका है। ये कुल कर्मचारियों का लगभग 70 प्रतिशत है। संचालनालय के 8816 प्रतिभागी पाठ्यक्रमों में पंजीकृत हैं, जिनमें से 6843 अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण प्राप्त किया जा चुका है। विभाग द्वारा विशेषज्ञों के माध्यम से 4 ई-लर्निंग मॉड्यूल निर्मित किये गये हैं। इनमें आश्रय-स्थल प्रबंधन, स्व-सहायता समूह गठन एवं प्रबंधन, राजस्व प्रबंधन, प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 शामिल हैं। प्रदेश की क्षमता निर्माण नीति मिशन कर्मयोगी के आदर्शों पर आधारित एक ठोस एवं दायित्वपूर्ण रणनीति है। इससे राज्य सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों की कौशल और नेतृत्व क्षमता लगातार बढ़ेगी। राज्य सरकार की यह पहल केन्द्र सरकार की नीति से मेल खाती है। प्रशिक्षित प्रशासन तंत्र से सक्षम उत्तरदायी सुशासन व्यवस्था को साकार किया जा रहा है।

4-5 फ्लाइट एकसाथ आईं तब भी एटीएस को नहीं होगी गफलत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। चेकोस्लोवाकिया के रडार से अपग्रेड होगा भोपाल एयरपोर्ट, कई फ्लाइट हो सकेंगी ट्रेस

इंटरनेशनल फ्लाइट्स के लिए तैयार राजा भोज एयरपोर्ट पर जल्द ही मोनोपल्स सेकेंडरी सर्विलांस रडार (एमएसएसआर) सिस्टम की शुरुआत होगी। चेकोस्लोवाकिया की मॉडर्न तकनीक वाले एमएसएसआर रडार से एक साथ दो या अधिक फ्लाइट की हर नैनो सेकंड तक की लोकेशन पर नजर रखी जा सकेगी।

इस नए सिस्टम की खास बात यह रहेगी कि एक साथ कई फ्लाइट्स के आने पर एटीसी से इनका संवाद (कम्युनिकेशन) मिक्स नहीं होगा और हर फ्लाइट की सटीक जानकारी एटीएस को मिलती रहेगी। अभी जो सिस्टम लगा है, उसमें एक साथ ज्यादा फ्लाइट के साथ संवाद में दिक्कत होती है और ठीक से जानकारी नहीं मिल पाती। ऐसे में एटीएस को कई बार गफलत हो जाती है।

यह रडार राजा भोज एयरपोर्ट के चारों ओर कई किलोमीटर तक की सीमा में आवागमन करने वाली फ्लाइट्स पर नजर रख सकेगा। जब कई विमान एक-दूसरे के बहुत करीब होते हैं या एक ही दिशा में उड़ रहे होते हैं, तो उनसे होने वाली बातचीत का डाटा ओवरलैप हो सकता है। जब ऐसा होता है, तो एयरपोर्ट पर लगाया गया ग्राउंड डिकोडर भ्रमित हो जाता है और उनकी जानकारी गायब हो जाती है।

इंदौर में कोरोना के 12 नए मरीज मिले, खरगोन की महिला की मौत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। इंदौर में कोरोना के 12 नए मरीज मिले, जिससे कुल संक्रमितों की संख्या 50 हो गई है। इनमें 9 मरीज दूसरे जिलों से हैं और फिलहाल 26 एक्टिव केस हैं। नए मरीजों में 6 पुरुष और 6 महिलाएं शामिल हैं, जिनकी उम्र 18 से 72 वर्ष के बीच है। चार मरीजों की कोई ट्रैवल हिस्ट्री नहीं है, जबकि अन्य गोवा, दिल्ली, पुणे और वियतनाम से लौटे हैं। एक महिला शादी समारोह में शामिल हुई थी। नीमच से आया 43 वर्षीय कैंसर मरीज अरबिंदो अस्पताल में भर्ती है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, ये मामले स्थानीय संक्रमण और बाहरी स्रोतों से आए संक्रमण की पुष्टि करते हैं, इसलिए टेस्टिंग और कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग जरूरी है। खरगोन की 44 वर्षीय महिला

की 28 मई को डिलीवरी के बाद तबीयत बिगड़ने पर एमआरटीबी अस्पताल के कोविड आइसोलेशन वार्ड में भर्ती किया गया था। 5 जून को आरटीपीसीआर जांच हुई और उसी दिन दोपहर को भर्ती करने के बाद 3.50 बजे उसकी मौत हो गई। विभाग का कहना है कि मौत का कारण कोरोना नहीं बल्कि डिलीवरी के बाद की जटिलताएं थीं। यह शहर में दूसरी कोरोना संक्रमित की मौत है।

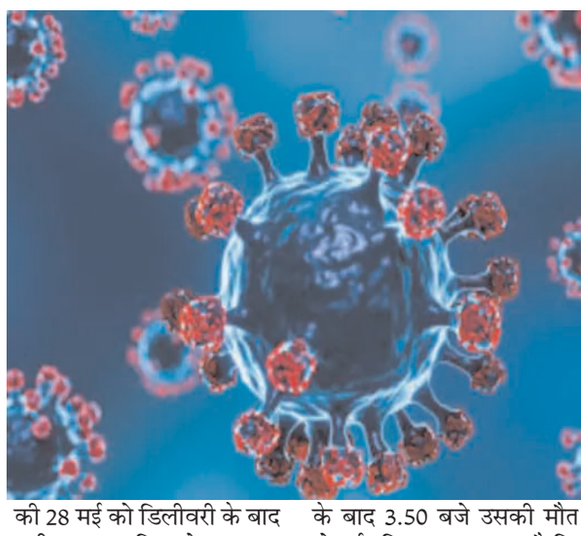

एमआरपी से ज्यादा रेट पर बिक रही शराब

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र में तय रेट से ज्यादा दामों पर शराब बेचे जाने के मामले अलग-अलग जिलों से सामने आते रहे हैं। अब नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने एमआरपी से ज्यादा दाम पर शराब बेचने का वीडियो ङ्ग पर शेयर कर मप्र सरकार और आबकारी मंत्री जगदीश देवड़ा को घेरा है।

नेता प्रतिपक्ष ने एकस पर लिखा- एमपी में शराब की कीमतों के घोटाले का जिम्मेदार कौन? जब बाजार में हर चीज एमआरपी पर मिलती है, तो शराब की दुकानों पर शराब मनमानी कीमत पर क्यों बिक रही है। इसलिए कि यह एक बड़ा खेल है और इस खेल में कई अफसर और शराब माफिया की टीमें खेल रही हैं। बिना राजनीतिक शह के न तो आबकारी अफसर हिम्मत कर सकते हैं और न शराब माफिया। समझ लीजिए कि इस गोरखधंधे की डोर किसके हाथ होगी नेता प्रतिपक्ष ने लिखा- आश्चर्य की बात तो यह कि आबकारी आयुक्त ने 1 अप्रैल से स्क्कि हर शराब दुकान पर रेट लिस्ट चस्पा करने का आदेश दिया, कीमत भी तय कर दी, पर इसका पालन नहीं हुआ। इंदौर में तो 2 महीने बाद भी किसी दुकान पर रेट लिस्ट चस्पा नहीं करवाई गई। जबलपुर कलेक्टर ने तो इस मामले में कार्रवाई भी की। मनमाने दाम पर बिकती शराब के हिस्सेदारों ने ही दुकानों को ऐसा न करने की हिम्मत दी होगी। ये जानकारी उपमुख्यमंत्री और आबकारी विभाग संभालने वाले देवड़ा जी की जानकारी में भी आई होगी। उन्होंने कुछ किया नहीं या उन्हें करने नहीं दिया गया। शराब की मूल कीमत और खरीददारों से वसूली गई कीमत का फर्क ही सारे खेल की जड़ है।

मैं तो एमपी में शराबबंदी का पुरजोर समर्थक हूं। पर, सरकार इस पर विचार ही नहीं कर रही। फिर भी राजस्व के लिए शराब बेचना सरकार की मजबूरी है, तो सही कीमत पर तो बिके।

मध्यप्रदेश में 41 डॉक्टरों और अधिकारियों के तबादले

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश शासन ने स्वास्थ्य विभाग में बड़ा फेरबदल करते हुए कई जिलों के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों सहित कुल 41 चिकित्सकों, विशेषज्ञों और प्रशासनिक अधिकारियों का तबादला कर दिया है। ये तबादले सामान्य प्रशासन विभाग की तबादला नीति वर्ष 2025 के तहत किए गए हैं।

इन्हें प्रशासनिक कार्य सुविधा की दृष्टि से तत्काल प्रभाव से लागू किया गया है लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा संचालनालय द्वारा शनिवार देर रात आदेश जारी किया गया, जिसके अनुसार, भोपाल का नया सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा को बनाया गया है। वे अब तक ग्वालियर में प्रभारी उप संचालक, कार्यालय क्षेत्रीय संचालक के पद पर पदस्थ थे।

गांधी मेडिकल कॉलेज में टीएमएस से ब्रेन डिसऑर्डर का इलाज

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऐसे मानसिक रोगी जिन पर दवाओं असर नहीं होता उनको भी बीमारियों से छुटकारा मिलेगा। इसके लिए गांधी मेडिकल कॉलेज के मनोरोग विभाग में ट्रांसक्रोनियल मैग्नेटिक स्टीमुलेशन मशीन मौजूद है। इस मशीन से गैर-आक्रामक उपचार पद्धति से ओसीडी सिजोफ्रेनिया, एंग्जाइटी, पैनिक अटैक समेत अन्य ब्रेन डिसऑर्डर का इलाज सिर्फ 15 से 20 मिनट के सेशन में किया जा रहा है। टीएमएस मशीन मस्तिष्क के खास भागों को एक्टिव करने के लिए चुंबकीय क्षेत्रों (मेग्नेटिक फील्ड) का इस्तेमाल करती है। इसमें एक क्वाइल होती है। जिसे सिर पर रखा जाता है। यह क्वाइल एक छोटा, केंद्रित चुंबकीय क्षेत्र बनाती है। जब यह मेग्नेटिक फील्ड दिमाग में प्रवेश करता है, तो यह न्यूरॉन्स (मस्तिष्क की कोशिकाओं) में छोटे विद्युत प्रवाह उत्पन्न करता है। जिससे ये न्यूरॉन्स सक्रिय हो जाते हैं। कई मामलों

में इसकी मदद से न्यूरॉन्स को निष्क्रिय भी किया जाता है।

मनोचिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. जेपी अग्रवाल ने बताया कि मानसिक बीमारियों में अक्सर मस्तिष्क में न्यूरो ट्रांसमीटर जैसे सेरोटॉनिन, डोपामाइन और नॉरपेनेफ्रिन का संतुलन बिगड़ जाता है। मेग्नेटिक सिस्टम में क्वाइल से चुंबकीय किरणें निकलती हैं, जो इस असंतुलित हिस्से को संतुलित कर देती हैं। इस तकनीक की सफलता दर 80 से 90 प्रतिशत है। खासकर उन 50 प्रतिशत मरीजों के लिए जिन पर दवाएं असर नहीं करती हैं। मेजर डिप्रेशन डिसऑर्डर में मस्तिष्क के कुछ हिस्सों की गतिविधि कम हो जाती है। ञ्जरूस् इस हिस्से को उत्तेजित करके मूड को नियंत्रित करने वाले केमिकल्स का संतुलन सुधारता है। यह उन मरीजों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है जिन्हें दवा या अन्य उपचारों से राहत नहीं मिली है। टीएमएस में मस्तिष्क के कुछ हिस्से अत्यधिक सक्रिय हो जाते हैं। टीएमएस इन हिस्सों की बढ़ी हुई गतिविधि को कम करने में मदद करता है। यह उन लोगों के लिए एक विकल्प है जिन्हें पारंपरिक उपचारों से पर्याप्त फायदा नहीं हुआ है। कुछ प्रकार के माइग्रेन के इलाज और रोकथाम के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। यह सिरदर्द शुरू होने से पहले या उसके दौरान मस्तिष्क के कुछ क्षेत्रों को नियंत्रित करके काम करता है।

जब तक जल सुरक्षित है-तब तक कल सुरक्षित है

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशन में 30 मार्च को उज्जैन से शुरू हुए जल गंगा संवर्धन अभियान को दो माह से अधिक हो गए है। अभियान का समापन 30 जून को होगा। जन सहभागिता से आगे बढ़ रहे इस अभियान से जल संरक्षण के क्षेत्र में खंडवा जिले को देश में पहला स्थान मिला है, जबकि केन्द्रीय जल संसाधन विभाग की एजेंसी के आकलन में प्रदेश को राज्यों की श्रेणी में चौथा स्थान मिला है। अभियान के अंतर्गत रिकार्ड खेत तालाब और अमृत सरोवर बनाये गए हैं। प्रदेश में 5 जून तक 2139 बावड़ियों और 4254 तालाबों की सफाई की गई है। अभियान में 3468 नदी घाटों की सफाई की गई है, 15 913 जल संगोष्ठी, 1677 नुक्कड़ नाटक और 12878 दीवार लेखन के कार्य

किये गए हैं। इस अवधि में अभियान में 36 लाख नागरिकों ने सहभागिता की है, इस तरह अभियान जनांदोलन बन गया है। आने वाली वर्षा ऋतु में अभियान के अंतर्गत बने खेत तालाबों, पुनरुद्धरित बावड़ियों और तालाबों में करोड़ों लीटर वर्षा जल सहेजा जा सकेगा। इससे भूजल स्तर में भी सुधार आयेगा और किसानों को फसल के लिए वर्ष भर पानी उपलब्ध रहेगा। देवास में जल गंगा संवर्धन अभियान के माध्यम से जल संरचनाओं के निर्माण एवं गहरीकरण का कार्य किया जा रहा है। नदी, नालों, कुएं, बावड़ियों और कुंड की साफ-सफाई की जा रही है तथा उनमें से गदंगी और गाद बाहर निकाली जा रही है। इसके साथ ही खेत तालाबों का भी निर्माण किया जा रहा है। अभियान के तहत कुएं, बावड़ियों की साफ-सफाई कर उनका सौंदर्यीकरण भी किया जा रहा है। मप्र जन अभियान परिषद ने जिले के बागली विकासखंड के कमलापुर गांव की 450 वर्ष प्राचीन हाथी बावड़ी साफ-सफाई और सौंदर्यीकरण किया गया। इस प्राचीन बावड़ी में हाथी पानी पीते थे। सहभागिता करने वाले नागरिकों ने जल संरक्षण की शपथ भी ली।

'जल गंगा संवर्धन अभियान' के अंतर्गत बुरहानपुर जिले की नगर परिषद शाहपुर में अमरावती नदी किनारे स्थित अधो-संरचनाओं के आस-पास जल ही 'जीवन की आस, इसे बचाने करो प्रयास', 'बोलेगी चिड़िया डाली-डाली, फैलाओ तो तुम हरियाली', 'दूषित नहीं करना जल, बर्बाद हो जायेगा

सीएमएचओ कार्यालय की टीम ने बिना अनुमति संचालित क्लिनिक्स को किया बंद

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल कार्यालय द्वारा बिना अनुमति संचालित क्लिनिक्स की जांच निरंतर की जा रही है। जिले में विभिन्न क्लिनिक्स के लाइसेंस की जांच की गई। इस दौरान सुंदर नगर, अशोका गार्डन में संचालित लाइफ केयर क्लिनिक में सीएमएचओ कार्यालय द्वारा जारी लाइसेंस नहीं पाए जाने पर इसे बंद करवाया गया है।

संचालक के पास बायोमेडिकल वेस्ट एवं पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड का सर्टिफिकेट भी उपलब्ध नहीं था। यह क्लीनिक डॉ. युसूफ खान द्वारा संचालित किया जा रहा था, जो कि यूनानी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक हैं। इसी क्षेत्र में संचालित लाइफ लाइन क्लीनिक में भी निरीक्षण दल जांच के लिए पहुंचा, हालांकि ये क्लीनिक बंद मिला।

स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा जिले में अलग अलग स्थानों पर चिकित्सा व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की डिग्री, चिकित्सा पद्धति, काउंसिल का पंजीयन, मप्र उपचार्यगृह एवं रूज़ोपचार संबंधी स्थापना अधिनियम, जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन अधिनियम, गुमास्ता लाइसेंस की जांच की जा रही है। निरंतर चल रहे कार्यवाही के कारण कई संचालकों ने अपने क्लिनिक्स बंद रखे हैं। इन क्लिनिक्स पर विभाग की टीम नजर रख रही है। स्थानीय पुलिस, नगर निगम एवं प्रशासन का सहयोग भी लिया जा रहा है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने कहा कि बिना सक्षम अनुमति चिकित्सा व्यवसाय के व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा निरीक्षण की कार्यवाही निरंतर जारी है। कार्यालय द्वारा जारी लाइसेंस को स्वास्थ्य केंद्रों में प्रमुख स्थान पर प्रदर्शित किया जाना आवश्यक किया गया है।

अचारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया में बिजली को लेकर हुई गफलत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अचारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया में बिजली को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। यहां के उद्योगपतियों और बिजली कंपनी के बीच यह बहस है कि यहां बिजली शहरी इलाके के दायरे में आती है या ग्रामीण इलाके में। बिजली कंपनी ने 3 दिन पहले 40 फैक्ट्रियों के कनेक्शन काट दिए थे, जिससे मामला गरमाया। एसोसिएशन का कहना है कि उनसे 4 साल तक ग्रामीण दरों पर बिल लिए गए, अब शहरी दरों पर क्यों लिए जा रहे हैं? बिजली कंपनी का तर्क है कि अचारपुरा ग्रुप-9 अर्बन डिसिप्लिन में आता है और इसका फीडर भी शहरी है। दरअसल, शहरी और ग्रामीण दरों में प्रति किलोवाट ?115 रुपए का फर्क है। इससे 50 किलोवाट लोड वाले को ?2.76 लाख और 10 किलोवाट वाले को ?5.52 लाख रुपए चुकाने पड़ रहे हैं।

विकसित कृषि संकल्प अभियान में किसानों को दी जा रही उन्नत खेती की जानकारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के प्रत्येक विकासखण्ड में विकसित कृषि संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत ग्राम पंचायत स्तर पर शिविर लगाकर कृषि विभाग के अधिकारी तथा कृषि वैज्ञानिक किसानों को उन्नत खेती की जानकारी दे रहे हैं। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड के लोहदवार तथा रौरा में आयोजित शिविर में किसानों को डॉ चन्द्रजीत सिंह कृषि वैज्ञानिक ने किसानों को धान की उन्नत किस्म तथा बीजोउपचार की जानकारी दी। किसानों को बताया गया कि फसल बीमा योजना नाममात्र के प्रीमियम पर की जाती है। किसान की फसल हमेशा खुले में रहती है। उसे सदैव विभिन्न तरह के प्राकृतिक प्रकोपों का सामना करना पड़ता है। प्राकृतिक प्रकोपों से फसलों को हानि होने पर किसान को बीमा सुरक्षा का लाभ मिलता है। इसलिए हर किसान अपनी फसल का बीमा अवश्य कराएं। शिविर में 82 किसान उपस्थित रहे।

अभियान के तहत विकासखण्ड जवा के ग्राम इटमा में आयोजित शिविर में किसानों को कृषि, उद्यानिकी और पशुपालन विभाग की योजनाओं की जानकारी दी गई। शिविर में बताया गया कि किसान शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ लेकर गौपालन करें। इसके माध्यम से किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। खेत तालाब में यदि आठ-नौ माह तक पानी रहता है तो उसमें कम अवधि की मछलियों का पालन किया जा सकता है। बकरी पालन तथा मुर्गी पालन के लिए भी शासन की योजनाओं से किसानों को सहयोग किया जाता है। विकासखण्ड गंगेव में आयोजित विकसित कृषि संकल्प अभियान में जनपद सदस्य रामबहोर कोरी तथा सरपंच ममता अजय शुक्ला ने भागीदारी निभाई। शिविर में 104 किसानों की सहभागिता रही। शिविर में कृषि वैज्ञानिक एके पटेल, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी शिवशरण सरल तथा अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। शिविर में प्राकृतिक खेती मिशन, उन्नत कृषि उपकरणों तथा उद्यानिकी विभाग की योजनाओं की जानकारी दी गई। शिविर में सरपंच ने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत आम के पौधे रोपित किए। सभी किसानों को कम से कम पाँच पेड़ रोपित करने का संकल्प दिलाया गया।

बदेरा में शासकीय महाविद्यालय भवन की नींव, शिक्षा को मिलेगा नया आयाम - जयंती तिवारी

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। आज मैहर तहसील के बदेरा क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक दिन रहा, जब यहां शासकीय महाविद्यालय के नवीन भवन की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम में प्रदेश की प्रभारी मंत्री श्रीमती राधा सिंह और मैहर विधायक श्री श्रीकांत चतुर्वेदी विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में स्थानीय लोग, जनप्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य जयंती तिवारी और मैहर के फायरब्रांड नेता और वरिष्ठ समाजसेवी महेश तिवारी ने महाविद्यालय भवन निर्माण की पहल का स्वागत करते हुए सरकार, प्रभारी मंत्री और विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी का आभार भदनपुर में व्यक्त किया। श्रीमती तिवारी ने कहा कि शिक्षा जीवन में भोजन से भी अधिक जरूरी है, क्योंकि यह व्यक्ति के जीवन की दिशा और दशा तय करती है। उन्होंने बताया कि यदि यह शासकीय महाविद्यालय भवन जल्द बनकर तैयार होता है, तो बदेरा क्षेत्र की लगभग 30 पंचायतों के छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए मैहर जैसे दूरस्थ शहरों तक नहीं जाना पड़ेगा। इससे समय और संसाधनों की बचत होगी और शिक्षा हर घर तक आसानी से पहुंच सकेगी।जयंती तिवारी ने यह भी कहा कि हमारे जनप्रतिनिधि लगातार शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए काम कर रहे हैं। यह महाविद्यालय क्षेत्र के युवाओं के सपनों को उड़ान देगा और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में जब बदेरा और मैहर के छात्र पढ़-लिखकर आगे बढ़ेंगे, तब यह क्षेत्र प्रदेश ही नहीं, देश में भी अपनी अलग पहचान बनाएगा। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे शिक्षा के क्षेत्र में एक मजबूत कदम बताया।

हेल्दी लीवर मिशन के तहत 12 जून को मनाया जाएगा फैटी लीवर डे

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा और मऊगंज जिले में एक जून से स्वस्थ लीवर अभियान चलाया जा रहा है। अभियान का मुख्य उद्देश्य नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर बीमारी के प्रति लोगों को जागरूक करना है। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री तथा लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री राजेन्द्र शुक्ल की विशेष पहल से फैटी लीवर के बारे में जागरूकता अभियान शुरू किया गया है। अभियान के तहत 12 जून को फैटी लीवर दिवस मनाया जाएगा। इस दिन जिले भर में स्वास्थ्य संस्थाओं में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके लोगों को नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज से बचाव के संबंध में जागरूक किया जाएगा। इसके साथ-साथ फैटी लीवर के संभावित रोगियों की जाँच के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र और जिला चिकित्सालय में निःशुल्क जाँच शिविर लगाए जाएंगे। गांव में प्रशिक्षित आशा कार्यकर्ता और एएनएम फैटी लीवर रोगियों की पहचान कर उनकी जाँच कराएंगे।

इस संबंध में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला ने बताया कि नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिसीज एक ऐसा विकार है जिसमें लीवर में अतिरिक्त वसा जमा हो जाता है। आमतौर पर शुरूआत में इससे किसी तरह की तकलीफ नहीं होती है तथा शरीर पर किसी तरह के लक्षण दिखाई नहीं देते हैं लेकिन बाद में पीड़ित को थकान, ऊपरी दाहिने पेट में दर्द और कभी-कभी पीलिया जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। फैटी लीवर आमतौर पर मोटापे, डायबिटीज और बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल जैसे कारणों से जुड़ा होता है। फैटी लीवर होने पर लीवर में सूजन, लीवर सिरोसिस और लीवर कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। लीवर सिरोसिस पर ध्यान न देने पर यह लीवर कैंसर में परिवर्तित होकर मृत्यु का कारण बन सकता है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि फैटी लीवर से बचाव के लिए हर व्यक्ति अपने वजन पर नियंत्रण रखे। अधिक वजन वाले व्यक्तियों को इसका अधिक खतरा रहता है। ऐसे डाइट कार्यक्रम से दूर रहें जो लंबे समय तक भूखे रहने की सलाह देते हैं। फैटी लीवर से बचाव के लिए आहार में वसा की मात्रा कम करें। अधिक कार्बोहाइड्रेट युक्त आहार जैसे चावल, आलू, सफेद ब्रेड का सेवन न करें। ये पदार्थ हमारी आंतों में जल्दी से अवशोषित हो जाते हैं और फैट के रूप में परिवर्तित होकर लीवर पर परत बना लेते हैं। इनके स्थान पर व्यक्ति को अनाज, दालें, नट्स, सेव, संतरा आदि का सेवन करना चाहिए। कार्बोनेटेड पेय पदार्थ और फ्रुक्टोज से भरपूर जूस का सेवन न करें।

आंगनवाड़ी केन्द्र चिरहुला में आयोजित किया गया मलेरिया और डेंगू जागरूकता शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जून माह को मलेरिया माह के रूप में मनाया जा रहा है। जिले भर में मलेरिया रोग से बचाव और उपचार के संबंध में लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस क्रम में आंगनवाड़ी केन्द्र चिरहुला में स्वास्थ्य विभाग की एंबेड परियोजना से निजी संस्था के सहयोग से मलेरिया जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। इस संबंध में एंबेड परियोजना की क्षेत्रीय समन्वयक कंचन सिंह ने बताया कि मच्छर खुले में पुराने बर्तनों, टायर अथवा जमीन में एकत्रित पानी में प्रजनन करते हैं। इसीलिए वर्षाकाल में मच्छरों की संख्या में तेजी से वृद्धि होती है। मलेरिया की रोकथाम के लिए घर के आसपास छत आदि में पानी एकत्रित न होने दें। गमलों, पुराने टायर, पुराने बर्तनों आदि में भी पानी का संचय न होने दें। स्थिर पानी में ही मच्छर अंडे देते हैं। मलेरिया से बचाव के लिए सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें। यदि किसी व्यक्ति को सरदर्द, बुखार, जोड़ों में दर्द की शिकायत रहती है तो अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर मलेरिया की निःशुल्क जाँच कराएं। जाँच के परिणाम के अनुसार डॉक्टर की सलाह पर उचित उपचार कराएं।

अमर ज्योति संस्थान ने करवाया 843 वाँ नेत्रदान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना समाजसेवी उमाकांत, गोपाल प्रसाद के भाई विनीत एवं निशांत के पूज्य पिता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता जी का विगत दिवस स्वर्गवास हो गया निधन उपरांत अश्वनी गुप्ता की प्रेरणा से प्रेरित होकर परिजनों ने पूज्यपिता श्री का नेत्रदान करने का निर्णय लिया सतगुरु की तकनीकी टीम द्वारा नेत्रदान कराया गया।

अमर ज्योति के संयोजक मनोहर डिगवानी ने कहा निश्चित रूप से गुप्ता जी के इस नेत्रदान से दो अंधकारमय जीवन रोशन होंगे नेत्र प्राप्त करने वाले नेत्रहीन आजीवन परिवार को दुवाए देंगे।

अमर ज्योति के सदस्य विनोद गेलानी ने बताया संस्था द्वारा यह 844 वां नेत्रदान करवाया इसके पूर्व 843 नेत्रदान हो चुके हैं।

समिति के मार्गदर्शक योगेश ताम्रकार,संयोजक मनोहर डिगवानी,कमल पुरस्वानी,मनोज अरोरा,नरेंद्र चंद्र गुप्ता,पुष्पराज सिंह,हरिओम गुप्ता,मनमोहन माहेश्वरी,विभाष बनर्जी,विनोद गेलानी,सुधीर जैन,ललित खुराना,दिलीप सोनी,प्रदीप अरोरा,विपुल हांडा,संजय वाधवानी,अनिल मोटवानी, जेठानंद वाधवानी, घनश्याम मँघरानी,श्यामलाल गुप्ता श्यामू,मनोज वलेजा,संदीप चमड़िया,अनिल झुलवानी, नीलांबर झा,बसंत शर्मा,संदीप धूत,दीपक वाधवानी,रूपेश वलेचा,तरुण ठक्कर,भरत आहूजा,पंकज आहूजा,श्रीमती मंजूषा शाह दिनेश अग्रवाल, अशोक ताम्रकार,उमेश लोहिया,डॉ प्रकाश सिंह,ज्ञान खटवानी,मनीष टेकवानी,धीरज टंडन,बलराम गुनानी सहित सभी सदस्यों ने दिवंगत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिजनों के प्रति साधुवाद प्रेषित किया हैं।

सीमांकन के प्रकरणों का 30 जून तक निराकरण करें

सर्किलवार रोस्टर बनाकर समय सीमा के प्रकरणों का निराकरण करायें - कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने समय सीमा बैठक में सीएम हेल्पलाइन 50 दिवस से अधिक समय से लंबित शिकायतों सहित आरसीएमएस में दर्ज शिकायतों के निराकरण की सीमा की। उन्होंने बैठक में उपस्थित समस्त तहसीलदारों को निर्देश दिये कि सीमांकन के सभी प्रकरण 30 जून तक अनिवार्यतः निराकृत करें तथा समाधान की 50 दिवस की लंबित शिकायतों का प्राथमिकता से निराकरण करायें।

कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने राजस्व विभाग में सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिये कि कब्जे से संबंधी शिकायतों में बेदखली की कार्यवाही करते हुए निराकृत करें। स्वामित्व योजना के तहत जवा एवं त्योंथर के लंबित प्रकरणों का प्रारूप प्रकाशन कराकर निराकरण करायें। उन्होंने जिले में फार्मर रजिस्ट्री के प्रकरणों में न्यून प्रगति पर अप्रसन्नता व्यक्त की तथा प्रतिदिवस समीक्षा कर प्रगति लाने के निर्देश राजस्व अधिकारियों को दिये।

समीक्षा बैठक में कलेक्टर ने विभागीय को निर्देशित किया कि सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों को संतुष्टि पूर्वक निराकरण करायें तथा ए ग्रेड में आये तभी जिले को ए ग्रेड मिलेगा। बैठक में बिना सूचना अनुपस्थित रहने वाले अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये गये। टीएल बैठक में जल गंगा संवर्धन अभियान के कार्यों को 30 जून तक पूर्ण करने तथा 15 जून तक वृक्षरोपण हेतु सभी आवश्यक तैयारियाँ सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर, समस्त एसडीएम, तहसीलदार, सीईओ जनपद तथा विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

केन्द्रीय जेल में बंदियों के लिये युग पुरोहित के प्रशिक्षण का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महानिदेशक जेल जीपी सिंह के निर्देश पर सुधारात्मक सेवाएं अन्तर्गत केन्द्रीय जेल में परिरुद्ध बंदियों को युग पुरोहित का प्रशिक्षण आरंभ किया गया है। जेल अधीक्षक केन्द्रीय के विशेष प्रयास से गायत्री परिवार के आचार्यों के कुशल मार्गदर्शन में परिरुद्ध बंदियों का युग पुरोहित का 30 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण में 30 बंदी सम्मिलित हुये । प्रशिक्षण के दौरान गायत्री शक्तिपीठ के आचार्यों द्वारा बंदियों को मानसिक एवं आध्यात्मिक शांति, विभिन्न श्लोकों के दैनिक वाचन तथा गायत्री मंत्र के नियमित पाठन से प्राप्त होने वाली ऊर्जा के संबंध में अवगत कराया गया। इस अवसर पर योगेन्द्र पमार उप जेल अधीक्षक, राजीव कुमार तिवारी शिक्षक की विशेष भूमिका रही। प्रशिक्षण के दौरान गायत्री परिवार ट्रस्ट गायत्री शक्तिपीठ के आचार्यों देवेश मिश्रा, रामयत्न मिश्रा, अनिल मिश्रा, रमेश वास्तव के साथ सतीश कुमार उपाध्याय जेल अधीक्षक संजीव कुमार गेंदले उप जेल अधीक्षक, पूजा मिश्रा सहायक जेल अधीक्षक, स्वदीप सिंह उपस्थित रहे ।

मैहर जिले की प्रभारी मंत्री राधा सिंह ने कलेक्ट्रेट सभागार में ली बैठक

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री और मैहर जिले की प्रभारी मंत्री श्री मती राधा सिंह ने सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार मैहर में जिले के अधिकारियो की जेब लेकर विकाश कार्यों,जल गंगा संवर्धन अभियान,विकसित कृषि संकल्प अभियान,जल निगम,पेयजल की स्थिति और विभागीय गतिविधियों की समीक्षा की।इस मौके पर सांसद श्री गणेश सिंह,विधायक श्री कांत चतुर्वेदी,जिलाध्यक्ष कमलेश सुहाने,वन समिति के सभापति हरीश कांत त्रिपाठी,कलेक्टर रानी बाटड,पुलिस अधीक्षक सुधीर कुमार अग्रवाल ,अपर कलेक्टर शैलेंद्र सिंह सहित विभाग प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे।

सरभंगा टाइगर रिजर्व बनाए जाने हेतु संकल्पित श्रीमद भागवत कथा के पंचम दिवस हुआ श्रीकृष्ण के बाल चरित्र का वर्णन

गोवर्धन पर्वत हरियाली का प्रतीक प्रकृति है तो मानव का जीवन है सुरक्षित - आचार्य डॉ विपिन कृष्ण जी महाराज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सरभंग मुनि की पावन तपोस्थली में सरभंगा टाइगर रिजर्व बनाए जाने हेतु आशुतोष द्विवेदी सेवा संस्थान द्वारा संकल्पित श्रीमद भागवत कथा के पंचम दिवस में कथा व्यास श्री बड़े देव स्वामी आश्रम के महंत भागवत भास्कर आचार्य डॉ श्री विपिन कृष्ण महाराज जी ने भगवान बालकृष्ण के बाल चरित्र और माखन चोरी की लीला गौचारण की कथा श्रवण कराई भगवान की मधुर मधुर कथाएं कालिया नाग की कथा व सांय की बेला गोवर्धन भगवान की पूजा धूमधाम से की गई और महाराज जी ने बताया कि गोवर्धन पूजा हरियाली का प्रतीक है प्रकृति है तो मानव जीवन सुरक्षित है इस मौके पर रमेश मिश्रा अमिरती,कैलाश सिंह बुंदेला,ठाकुर प्रसाद मिश्रा,कुलदीप सिंह पगार,राजेंद्र सिंह खोरड़ी,अंकित शुक्ला सभापुर,मंटी मिश्रा,बिब्बी मिश्रा,शिवा यादव,रोहित केवट,विक्रम पांडेय,पंकज मिश्रा,शिवा यादव का अतुलनीय सहयोग प्राप्त हो रहा वहीं इस समय सरभंगा आश्रम में सरभंगा टाइगर रिजर्व के समर्थकों व प्रेमियों का जान सैलाब देखने को मिलता है ।

सिंदूर के पौधे रोपित कर आयोजित किया गया हरित योग

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के सभी जिलों में 21 जून को विश्व योग दिवस मनाया जाएगा। योग दिवस के कार्यक्रमों में आमजनता की बड़ी संख्या में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आयुर्वेद विभाग अन्य विभागों के सहयोग से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। इस क्रम में अटल पार्क सिविल लाइन रीवा में हरित योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूर्व महापौर वीरेन्द्र गुप्ता ने सिंदूर का पौधा रोपित करके हरित योग कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर औषधीय पौधों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा कार्यक्रम में सहभागी 300 से अधिक आमजनों को पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दिलाया गया। इस संबंध में संभागीय आयुष अधिकारी डॉ शारदा मिश्रा ने बताया कि आयुष विभाग द्वारा हरित योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्व योग दिवस पूर्व तैयारी और पर्यावरण जागरूकता के लिए आयुष विभाग रीवा एवं ग्राहक पंचायत तथा डिब्रायु फार्मास्युटिकल के संयुक्त तत्वावधान में हरित योग का आयोजन किया गया।

विचार

आरबीआई ने तो राहत दे दी, लेकिन क्या बैंक इसे लोगों तक पहुंचाएंगे?

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और पंजाब नेशनल बैंक सहित सभी सरकारी एवं प्राइवेट बैंकों को होम लोन उपभोक्ताओं को बार-बार ब्रांच दौड़ाने और कागजी कार्यवाही में फंसाने की बजाय तुरंत ऑनलाइन ही राहत दे देनी चाहिए। घरों की घटती बिक्री और अर्थव्यवस्था पर लगातार पड़ रहे दबाव के बीच भारतीय रिज़र्व बैंक ने बड़ा कदम उठाते हुए रेपो रेट में बंपर कटौती कर दी है। आर्थिक मामलों के जानकार, यह उम्मीद लगा रहे थे कि आरबीआई शुक्रवार को रेपो रेट में 0.25 फीसदी की कटौती कर सकता है लेकिन आरबीआई ने उम्मीद से ज्यादा राहत देते हुए इसमें आधा फीसदी की कटौती कर दी। आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने इस बड़े फैसले की जानकारी देते हुए बताया कि बहुमत से यह फैसला किया गया है। रेपो रेट में 50 बेसिस पॉइंट की कटौती के बाद अब यह 5.50 फीसदी हो जाएगा। इसके साथ ही आरबीआई ने कैश रिज़र्व रेश्यो में एक प्रतिशत की कमी का भी ऐलान किया। इससे बैंकों के पास पैसा और बढ़ेगा, जिसका इस्तेमाल वे कर्ज बांटने में कर सकेंगे। भारतीय रिज़र्व बैंक ने लगातार तीसरी बार दरों में कटौती की है। आरबीआई ने फरवरी, अप्रैल और जून में यानी कुल मिलाकर रेपो रेट में तीन बार कटौती कर, इसमें 100 बेसिस पॉइंट्स घटा दिए हैं। रेपो रेट और कैश रिज़र्व रेश्यो में कटौती के आरबीआई के दोनों फैसलों को अगर साधारण भाषा में बताया जाए तो, इसका एकमात्र बड़ा उद्देश्य लोगों की जेबों तक ज्यादा से ज्यादा पैसा पहुंचाना है ताकि उनके पास खर्च करने के लिए अतिरिक्त पैसा बचे। अगर लोगों के पास पैसे बचेंगे तो वे खर्च करेंगे, जिससे बाजार में तेजी आएगी और अर्थव्यवस्था की विकास दर भी बढ़ेगी। लेकिन यह तभी संभव हो पाएगा जब बैंक पूरी ईमानदारी के साथ आरबीआई द्वारा की गई कटौतियों का लाभ सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचा पाएंगे। आरबीआई द्वारा रेपो रेट में की गई कटौती के बाद होम लोन लेने वाले लोगों को बड़ी राहत मिल सकती है। मोटे तौर पर अगर अनुमान लगाया जाए तो 20 लाख के लोन की ईएमआई में 600-715 रुपए तक की कटौती हो सकती है यानी एक साल में 8,400 और 20 वर्षों में कुल मिलाकर एक लाख 68 हजार रुपए के लगभग की बचत हो सकती है। वहीं 50 लाख तक के होम लोन की ईएमआई पर 1650-1755 रुपए तक की राहत मिल सकती है। अगर किसी ने 20 वर्षों के लिए इतनी राशि का होम लोन ले रखा होगा तो उसे 4 लाख रुपए से भी ज्यादा की बचत होगी। जाहिर तौर पर होम लोन उपभोक्ताओं को इससे बड़ी राहत मिलेगी, बशर्ते बैंक कागजी कार्यवाही में किंतु-परंतु करने की बजाय सीधे उपभोक्ताओं को राहत पहुंचाए। आरबीआई के डेटा के मुताबिक, लगभग 40 फीसदी होम लोन अर्थात एक्सटर्नल बेंचमार्क लैंडिंग रेट से जुड़े हैं और उन्हें इस कटौती का तत्काल लाभ मिल जाना चाहिए। बैंकों को ऐसे उपभोक्ताओं को तुरंत राहत दे देनी चाहिए। इसके साथ ही बैंकों को होम लोन लेने वाले उन उपभोक्ताओं को भी राहत पहुंचाने के लिए काम करना चाहिए जो EBLR से नहीं जुड़े हुए हैं। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और पंजाब नेशनल बैंक सहित सभी सरकारी एवं प्राइवेट बैंकों को होम लोन उपभोक्ताओं को बार-बार ब्रांच दौड़ाने और कागजी कार्यवाही में फंसाने की बजाय तुरंत ऑनलाइन ही राहत दे देनी चाहिए।

मोदी सरकार की उपलधियों के ग्यारह साल

उमेश चतुर्वेदी

भारतीय परंपरा में ग्यारह की संया शुभ मानी जाती है। पारिवारिक और धार्मिक समारोहों में शगुन के रूप में ग्यारह रूपए की भेंट देने की परंपरा इसी वजह से रही है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल को शगुन काल भी कह सकते हैं। ग्यारह साल का वक्त कम नहीं होता। इस दौरान पीढ़ी भी बदल जाती है। ऐसे में इस पूरे दौर का जो मूल्यांकन होगा, उसे पीढ़ीगत नजरिए से भी देखना होगा, योंकि हर नई पीढ़ी का नजरिया बुजुर्गों से अलग होता है। इन अर्थों में देखेंगे तो प्रधानमंत्री मोदी और उनका कार्यकाल अनूठा लगेगा। मोदी और उनकी कार्यशैली पुरानी पीढ़ी को भी पसंद हैं और नई पीढ़ी के तो प्रेरक हैं ही। इसकी वजह है, उनकी अद्भुत संप्रेषण कला, जिसके जरिए वे सीधे लोगों के दिलों से जुड़ जाते हैं।

नेहरू और इंदिरा के कार्यकाल के बाद लंबा कार्यकाल वाले प्रधानमंत्री की सूची में मोदी पहुंच चुके हैं। किसने सोचा था कि 1984 में महज दो लोकसभा सीटों तक सिमटने वाली भारतीय जनता पार्टी कभी लगातार तीन संसदीय चुनावों में बाजी मारती रहेगी। इसमें शक नहीं कि यह उपलब्धि भारतीय जनता पार्टी को मोदी के नेतृत्व से ही हासिल हुई है। अगर जनता ने मोदी पर लगातार भरोसा जताया तो इसकी वजह है उनकी कार्यशैली। 2014 की जीत में लोगों की उम्मीदें थीं। इन उम्मीदों की वजह विकास का उनका गुजरात मॉडल रहा। लोगों की उम्मीदों को पूरा करने की उन्होंने जो कोशिश की, 2019 में उसे जनता का भरपूर साथ मिला। उनमें भरोसे की वजह ही थी कि उन्हें और ज्यादा भारी बहुमत से रायसीना की पहाड़ियों के बीच शपथ लेने का मौका मिला। इस कड़ी में देखें तो 2024 में बहुमत से दूर रह जाना खटकता है। लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि दस साल के कार्यकाल में आकांक्षाओं का उद्दाम होना स्वाभाविक है और सारी आकांक्षाओं का पूरा कर पाना भी संभव नहीं है। इसलिए कुछ लोग हो सकता है निराश भी रहे हों। जिसका असर चुनाव नतीजों पर दिखा।

मोदी के कार्यकाल की कई उपलब्धियां हैं। मोटे तौर पर सबसे बड़ा जो बदलाव दिखता है, वह है कि इस पूरी अवधि में देश में कोई बड़ा भ्रष्टाचार नहीं दिखा। ऐसा नहीं कि सरकारी तंत्र से भ्रष्टाचार पूरी तरह खत्म हो गया है। जमीनी स्तर पर सरकारी तंत्र की सोच में पारंपरिक भ्रष्टाचारी गंध है। मोदी सरकार के कार्यकार में यह हुआ है कि भ्रष्टाचारियों पर शिकंजा कसता रहा है। इस शिकंजे से न तो अधिकारी बाहर हैं और न ही राजनेता। तकरीबन पूरे देश में सरकारी तंत्र के कामकाज का अपना तरीका रहा है, उसकी अपनी गति रही है। लेकिन मोदी के नेतृत्व में अब कामकाज का तरीका बदला है। इसे समझने के लिए हाल ही में हुए दुनिया के सबसे ऊंचे पुल के उद्घाटन समारोह को देख सकते हैं। चिनाब पुल के उद्घाटन के वक्त जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि जब इस परियोजना की शुरूआत हुई, तब वे आठवीं में पढ़ रहे थे, अब वे पचपन साल के हैं और अब जाकर यह पूरा हो पाया है। मोदी के ग्यारह साल के शासन में तंत्र का कामकाज का तरीका बदला है। अब वह ज्यादा अनुशासित और लक्ष्यों को वक्त पर पूरा करने को लेकर ज्यादा प्रतिबद्ध हुआ है। नौकरशाही में संजीदापन तो आया है, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में नौकरशाही पर तंत्र के दूसरे अंगों की बजाय ज्यादा भरोसा बढ़ने की वजह से तटस्थ लोगों की नजर में ब्यूरोक्रेसी कई मामलों में बेलगाम भी हुई है। इसे संयोग ही कहेंगे कि जिस समय मोदी सरकार अपनी ग्यारहीं सालगिरह मनाने जा रही है, उसी वक्त विश्व बैंक की एक रिपोर्ट आई है। इस रिपोर्ट के अनुसार, इस दौरान देश में गरीबों की संख्या 27.1 फीसद से घटकर 5.3 प्रतिशत रह गई है। इससे पहले बीते एक दशक में अत्यधिक गरीबी में जिंदगी गुजार रहे लोगों की दर 2011-12 में जहां 27.1 प्रतिशत रही, वह घट कर 5.3 फीसद रह गई है। यह तब हुआ है, जब विश्व बैंक ने गरीबी रेखा के लिए तीन डॉलर प्रतिदिन खर्च की सीमा कर दी है, जबकि इसके पहले यह सीमा 2.15 डॉलर प्रतिदिन थी। जाहिर है कि इसके पीछे 81 करोड़ लोगों को मुफ्त अन्न योजना के साथ ही उज्ज्वला, मुद्रा आदि योजनाओं की कामयाबी रही है। मोदी सरकार की कई उपलब्धियां है। देश ने मेडिकल कॉलेजों के मोर्चे पर बड़ी सफलता हासिल की है। साल 2014 में जहां इन कॉलेजों की संख्या 387 थी, वह 2025 में बढ़कर 780 हो गई है। इसी तरह एमबीबीएस की सीटें भी 51,348 से बढ़कर 2024 में 1.18 लाख हो गई हैं। मोदी सरकार के कार्यकाल में बीजेपी के दावे के अनुसार, 17.1 करोड़ नई नौकरियां निकलीं। इस दौरान स्टार्टअप से 1.61 लाख युवाओं को रोजगार मिला। बीजेपी के दावे के अनुसार, सरकार की कौशल विकास मिशन के तहत अब तक 2.27 करोड़ से अधिक युवाओं को ट्रेनिंग मिल चुकी है। उज्ज्वला योजना के तहत अब तक करीब दस करोड़ 28 लाख से ज्यादा गैस कनेक्शन दिए जा चुके हैं। मुद्रा योजना के तहत करीब 52करोड़ ऋण खाते खोले गए हैं, यानी करीब इतने लोगों को कर्ज मिल चुका है। इससे उद्यमशीलता को बढ़ावा मिला है। प्रधानमंत्री आवास, जन-धन और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं ने देश में बदलाव लाने में बड़ी भूमिका निभाई है। देशभर में बारह करोड़ शौचालयों का निर्माण भी मामूली उपलब्धि नहीं है। मोदी सरकार की इन योजनाओं के चलते देश में बदलाव हुआ है। सबसे बड़ा बदलाव डीबीटी यानी सीधे कैश ट्रांसफर की योजनाओं ने ग्रामीण और कमजोर वर्गों तक शासन की योजनाओं की पहुंच बढ़ाई है।

जापान को पछाड़कर भारत हाल ही में दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। इसका भी श्रेय मोदी सरकार को ही जाता है। देश सिर्फ आर्थिक ही नहीं, सांस्कृतिक मोर्चे पर लगातार विकास कर रहा है। इस विकास में परंपरा, आधुनिकता और वैश्विक जुड़ाव का अद्भुत समावेश नजर आता है। मोदी सरकार की ही देन है कि काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, उज्जैन का महाकाल लोक, मां कामाख्या मंदिर, राम मंदिर अयोध्या, केदारनाथ धाम और जूना सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है। राममंदिर के निर्माण की उपलब्धि ही मोदी सरकार के खाते में जाती है। इसी दौरान उत्तराखंड में चारधाम राजमार्ग परियोजना, हेमकुंड साहिब रोपवे और बौद्ध सर्किट विकास जैसी योजनाएं शुरू हुईं। करतारपुर कॉरिडोर के चलते पाकिस्तान स्थित दरबार साहिब भारतीय सिखों के लिए सुलभ हुआ। इसी दौरान राष्ट्रनिर्माताओं को सम्मान देने की दिशा में प्रधानमंत्री संग्रहालय, राष्ट्रीय युद्ध स्मारक, राष्ट्रीय पुलिस स्मारक, जलियांवाला बाग स्मारक और 11 आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय जैसे संस्थान बनाए गए। मोदी के कार्यकाल में ही देश की खोई धरोहरों की वापसी का अभियान तेज हुआ। 2013 से पहले विदेशों में चोरी से गई सिर्फ 13 प्राचीन वस्तुओं की ही वापसी हुई थी, जबकि 2014 के बाद से अब तक 642 प्राचीन वस्तुएं भारत लौटाई गई हैं, जिनमें से अकेले अमेरिका से 578 कलाकृतियां लौटी हैं।आयुर्वेद और योग की वैश्विक मान्यता भी मोदी सरकार की ही उपलब्धि कही जाएगी।

मोदी सरकार के ही कार्यकाल में आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस की नीति बनी और उसे लागू किया गया। ऑपरेशन सिंदूर उसका ही प्रतीक है। जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 का खात्मा, 2019 में पुलवामा हमले के जवाब में पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक, जैसे कदम मोदी सरकार ने ही उठाए। मोदी के शासन काल में भारत ने ग्लोबल साउथ की अवधारणा को मजबूत करते हुए अफ्रीकी देशों से नए सिरे से संबंध बढ़ाए। रूस और यूक्रेन युद्ध और अमेरिकी रोक-टोक के बावजूद भारत रूस से सस्ती दरों पर पेट्रोलियम तेल खरीदने में सफल रहा। उत्तर पूर्वी राज्यों को देश की मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिशें इसी दौर में तेजी से बढ़ीं। नक्सलवाद पर लगाम भी तेजी से इसी दौर में लगा।

मोदी सरकार की उपलब्धियों की फेहरिस्त लंबी है। लेकिन भारत जैसे बहुभाषी, बहुरंगी देश में अब भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। आर्थिक आय की असमानता में संतुलन आज की बड़ी जरूरत है। भारत को यूरोप की तर्ज पर विकसित करने, प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने की जरूरत अब भी है। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले दिनों में भारत इन उपलब्धियों को भी हासिल करने में सफल रहेगा।

मीडिया की विश्वसनीयता पर उठते सवाल

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

मीडिया की विश्वसनीयता पर उठते सवालों के बीच आकाशवाणी और बाद में दूरदर्शन के शुरुआती वे दिन बरबस याद आ जाते हैं जब आकाशवाणी के नेशनल और प्रादेशिक समाचारों के प्रति आमजन के विश्वास को इसी से समझा जा सकता है कि चौराहों की चाय-पान की दुकानों पर खड़े होकर भी समाचार सुनने में किसीको कोई संकोच ना होकर गर्व महसूस होता था। आकाशवाणी के नेशनल समाचारों की बात हो तो सुबह 8 बजे और रात: पौने नो बजे के समाचार बुलेटिनों की बेसब्री से प्रतीक्षा होती थी तो प्रात:कालीन प्रादेशिक समाचार के साथ ही खासतौर से सायंकालीन सात बजे के प्रादेशिक समाचार को कोई भी प्रदेषवासी मिस नहीं करना चाहता था। आकाशवाणी और दूरदर्शन का यह स्वर्णकाल इस मायने में कहा जा सकता है कि सरकारी नियंत्रण में होने के बावजूद आमआदमी तो क्या पक्ष और विपक्ष के नेतागण भी समाचारों की विश्वसनीयता पर प्रष्न नहीं उठा पाते थे। होता तो यहां तक था कि आकाशवाणी के कार्यक्रमों से लोग अपनी घड़ियों को मिलाया करते थे। विश्वसनीयता का यह कोई आसान काम नहीं था पर उस समय के दिग्गज मीडियाकर्मियों ने अपनी मेहनत, लगन और निष्पक्षता से सींचने का काम किया और उसका परिणाम यह रहा कि उस समय के मीडिया दिग्गजों को समूचे समाज में चाहे वह राजनीतिक स्तर हो, ब्यूरोक्रेटिक स्तर हो या फिर आमजन सभी जगह सम्मान से देखा जाता था। यदि प्रादेशिक स्तर की बात की जाए तो आकाशवाणी जयपुर अजमेर के समाचार संपादक और बादमें दूरदर्शन जयपुर केन्द्र के समाचार एकांश के निदेशक मोहनराज सिंघवी जिन्हे मीडिया जगत में एमआर सिंघवी के

नाम से जाना जाता रहा है की मेहनत, निष्पक्षता और मीडिया की स्वतंत्रता की पक्षधरता का ही परिणाम रहा कि मीडिया जगत में एमआर सिंघवी एक ब्राण्ड के नाम से पहचान बनाने में कामयाब रहे। पक्ष-विपक्ष के सभी नेता, समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों सहित आमजन में जिस तरह की छवि एमआर सिंघवी की बनी वह आजके मीडिया कर्मियों के लिए ईर्च्छा का कारण बन सकती है तो प्रेरणास्पद भी है। बात में इतना दम की क्या तो मुख्यमंत्री से लेकर मंत्रीमण्डल के सदस्यगण और क्या ब्यूरोक्रेसी के कर्ताधर्ता एमआर सिंघवी की बात को कमतर समझने की भूल भी नहीं कर सकते थे।

यह आज के समय में अविश्वसनीय कल्पना ही हो सकती है कि 90 के दशक में एमआर सिंघवी के आकाशवाणी जयपुर पिंकसिटी पेट्रोलपंप के पास स्थित आवास पर मिलनेवाले जरुरतमंद लोगों का जमावड़ा इस तरह से लगा रहता था जैसे किसी राजनेता के निवास पर लगा होता था। पीड़ित व्यक्ति के लिए एमआर सिंघवी एक सहारा रहे हैं। इसका कारण भी यह रहा कि यदि काम जायज है और हितकारक है तो सिंघवी जी आने वाले व्यक्ति के सामने ही संबंधित मंत्री से लेकर अधिकारी को फोन करने में किसी तरह का संकोच नहीं करते थे और आने वाले व्यक्ति की आंखें एहसान से बोझिल हो जाती तो काम भी आसानी से हो जाता था। खासबात यह कि बिना जानपहचान भी कोई अपने दुखदर्द को लेकर पहुंच जाता था तो सहयोग करने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ते। मैं स्वयं इसका उदाहरण हूं। किसी दिन आकाशवाणी के अनुबंध पर समाचार अनुभाग के लिए लिखित परीक्षा हुई और एक दिन एकाएक घर पर आकाशवाणी से अनुबंध का पत्र आ गया। डिप्लोमा भले ही पत्रकारिता में कर लिया हो पर अनुभव के मामलें में शून्य होने के बावजूद जिस तरह से सिंघवी जी ने मेरे जैसे को तराशा उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। मजे की बात यह कि एमआर सिंघवी पोलियों से ग्रसित होने के कारण चलने फिरने में असुविधा के बावजूद किसी के भी सहयोग के लिए उनके साथ जाने को तैयार हो जाते। विकलांगों के लिए उन्होंने संघर्ष करने के साथ ही स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के खेलों का आयोजन, संयोजन व प्रोत्साहन दिया। देवेन्द्र झाझड़िया तो एक उदाहरण मात्र है जिन्हें विश्वपटल पर पहचान सिंघवी जी की प्रेरणा-प्रोत्साहन और सहयोग से ही संभव हो सका।

आकाशवाणी का यह वह जमाना था जब टेलीप्रिंटर और टेलीफोन ही प्रमुख माध्यम होते थे। सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय से समाचारों की डाक आती थी वहीं प्रादेशिक समाचारों में समूचे प्रदेष के प्रमुख समाचारों का समावेश महत्वपूर्ण होता था। ऐसे में लगभग प्रतिदिन समाचार संपादक होने के बावजूद बिना किसी संकोच के फोन से समाचार लेने व स्वयं लिखने तक में संकोच नहीं करने के कारण ही मीडिया जगत में पहचान और विश्वसनीयता बनी। बुलेटिन में खबरों के चयन से लेकर प्रसारण तक तनावरहित वातावरण में काम करना और नए लोगों को प्रोत्साहित करना यही तो सिंघवी जी की पहचान रही। हिम्मत यह कि जयपुर दूरदर्शन निदेशक समाचार रहते हुए तत्कालीन केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री स्व. गिरिजा व्यास के जयपुर में एक ब्यूटीपार्लर के उद्घाटन के समाचार प्रसारित करने के दबाव के बावजूद मीडिया मानदंडों के विरुद्ध बताते हुए प्रसारित नहीं करना सिंघवी जैसे बिड़ला ही कर सकते हैं। इसी तरह से तत्कालीन मुख्यमंत्री जगन्नाथ पहाडिया के पिताजी के देहावसन के समाचार प्रसारण के लिए लाख दबाव के बावजूद विनम्रता से नीति विरुद्ध जाकर समाचार प्रसारित नहीं करने का निर्णय कोई सिंघवी जैसा ही ले सकता है। आज तो केन्द्रीय मंत्री वो भी स्वयं का माईबाप यानी कि स्वयं के विभाग का हो तो उसकी खबर तो क्या आगे पीछे सेवा सुश्रुषा में ही लगे रहने में गर्व महसूस करते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि एमआर सिंघवी कोई ऐसे ही नहीं बनता, कोई ऐसे ही राजनेताओं, पक्ष विपक्ष के छोटे से लेकर बड़े नेताओं, ब्यूरोक्रेट्स सभी के लिए सम्मानजनक अपनी कार्यशैली, निष्पक्षता, निष्ठा और मेहनत से ही बना पाता है। प्रदेश का संभवत: कोई छोटा-बड़ा नेता या अधिकारी ऐसा नहीं होगा जो एमआर सिंघवी के नाम, पहचान और उनकी कार्यशैली का कायल नहीं होगा। इतने विस्तृत केनवास पर पहचान और विश्वसनीयता कोई ऐसे नहीं बन जाती बल्कि यह ईमानदारी, निस्वार्थता और सहायता और सहयोग की भावना के कारण ही हो पाता है। यही सिंघवी जी की पूंजी मानी जा सकती है। समाचार में समाचारत्व है तो उसे बिना किसी पक्षपात के स्थान मिलता वहीं तत्कालीन राज्यपाल जोगेन्द्र सिंह द्वारा रिकार्ड वाइस ओवर प्रसारित कराने के दबाव के बावजूद स्तरीय नहीं होने से प्रसारित नहीं करने का साहस कोई एमआर सिंघवी ही कर सकता है।

जिला खनिज अधिकारी को दी सूचना, पहुंचे माफिया के गुगे, वीडियो बनाकर वायरल किया तब बची जान

रेत खदान में फायरिंग...पत्रकारों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा

मीडिया ऑडीटर, गरियाबंद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में अवैध रेत खनन की खबर बनाने गए पत्रकारों को रेत माफिया ने दौड़ा-दौड़ाकर पीटा है। 2 बार हवाई फायरिंग की। माफिया के गुर्गों ने पहले पत्रकारों से बहस की, फिर कैमरा और आईडी कार्ड छीना। मामला राजिम थाना क्षेत्र के पैरी नदी के पितईबंद रेत घाट का है।

वारदात के वक्त किसी तरह जान बचाकर भाग रहे पत्रकारों ने वीडियो वीडियो बनाया है, जिसमें वह खून से सने दिख रहे हैं। वीडियो में दिख रहा है कि 3 लोग दौड़ रहे हैं। वह वीडियो में कह रहे हैं कि रेत माफिया ने हमला किया है। प्रशासन पत्रकारों को बचाए। वीडियो करीब 14 सेकेंड का है।

रेत माफिया की गुंडागर्दी को लेकर बड़ी संख्या में पत्रकारों ने आईडी माइक सड़क पर रखकर धरने पर बैठे हैं। रेत माफिया को सरंक्षण देने वाले जिले के खनिज अधिकारियों और रेत माफिया के खिलाफ कार्रवाई की मांग पर अड़े हैं।

दरअसल, 9 जून दिन सोमवार को गरियाबंद के पत्रकार इमरान मेमन, थानेश्वर साहू और जितेंद्र सिन्हा समेत 4-5 निजी चैनल के पत्रकार अवैध रेत खनन की सूचना पर कवरेज करने गए थे। इस दौरान वह पितईबंद के अवैध रेत खदान पहुंचकर वीडियो बनाए।

साथ ही अवैध परिवहन में लगे वाहनों को पकड़ने के लिए जिला खनिज अधिकारी को सूचना दी। इस दौरान माइनिंग की टीम नहीं पहुंची। खनिज विभाग के अधिकारियों की जगह खदान संचालक के 7-8 गुर्गे वहां आ गए।

पत्रकारों को रेत खदान में देखकर भड़क गए। रेत माफिया के गुर्गे हथियारों से लैस थे। मारपीट करने से पहले 2 बार हवाई फायरिंग की भी की। पत्रकार इमरान के सिर पर लोहे के हथियार से वार किया, जिससे उनके सिर से खून भी बहने लगा।पत्रकार खून से सने हालात में मौके से जान बचाकर भागने लगे। गुर्गों ने बाइक और स्कूटी से उनका पीछा किया। पत्रकारों ने अपनी जान बचाने के लिए खेतों में छिप गए।

वॉट्सऐप ग्रुप में वीडियो शेयर करने पर जागा प्रशासन

पत्रकारों से मिली जानकारी के मुताबिक उनके पास जब बचने का रास्ता नहीं बचा तो वह वीडियो बनाकर गरियाबंद के प्रशासनिक ग्रुप में शेयर किए। इसके बाद अधिकारियों ने वीडियो देखकर एक्टिव हुए।कलेक्टर भगवान सिंह यूके ने तुरंत एसडीएम को घटनास्थल के लिए रवाना किया।

एडिशनल एसपी जितेंद्र चंद्राकर ने बताया कि राजिम पुलिस और प्रशासन की टीम घटनास्थल पर गई थी। पत्रकारों की शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ परिवारद्धढ्ढ दर्ज की गई है। जांच के बाद आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

वहीं हमलावरों के खिलाफ मामूली धाराओं के तहत परिवारद्धढ्ढ करने पर पत्रकार भड़क गए हैं। राजिम के सुंदर लाल शर्मा चौक पर धरने पर बैठ गए हैं। पत्रकार मांग कर रहे हैं कि जानलेवा हमला करने वाले हमलावर और जिनके इशारे में वारदात को अंजाम दिया गया, उन पर हत्या के प्रयास के मामले दर्ज किया जाए।

इसके साथ ही सभी अवैध रेत खदानों को बंद किया जाए। साथ ही कार्रवाई में लापरवाही बरतने वाले जिला खनिज अधिकारी को हटाने की मांग की है।

बता दें कि पैरी और महानदी में सिर्फ 4 रेत खदानों का लाइसेंस है। 12 रेत खदान अवैध तरीके से चल रहे हैं। पितईबंद रेत घाट पत्रकारों से मारपीट हुई, वहां बिना लाइसेंस रेत खनन हो रहा है। आरोप है कि भाजपा नेता के सरंक्षण में राजिम क्षेत्र में 17-18 घाटों में अवैध रेत खनन किया जा रहा है।

गरियाबंद में सालभर पहले पत्रकार नागेंद्र निषाद पर परसदा जोशी रेत खदान में में हमला हुआ था। कवरेज के दौरान पिटाई की गई थी, जिसकी शिकायत राजिम थाने में हुई थी।

चिरमिरी जिला हॉस्पिटल परिसर में 10 जून को आयोजित होगा नि :शुल्क रक्त एवं कैंसर जांच परामर्श शिविर

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिला चिकित्सालय चिरमिरी परिसर में पूर्व निर्धारित निःशुल्क रक्त एवं कैंसर जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन अब 10 जून 2025, दिन मंगलवार को किया जाएगा। पूर्व में यह शिविर 11 जून को आयोजित होना प्रस्तावित था, लेकिन अब इसे एक दिन पूर्व आयोजित किया जा रहा है। इस संबंध में मुख्य सर्जन (सीएस), जिला अस्पताल चिरमिरी द्वारा आदेश जारी करते हुए सभी संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सूचित किया गया है कि वे अपने निर्धारित ड्रेस कोड, पहचान पत्र (आई कार्ड) एवं नेम प्लेट के साथ अनिवार्य रूप से शिविर स्थल पर उपस्थित रहें। यह शिविर आम नागरिकों के स्वास्थ्य परीक्षण और परामर्श हेतु एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसमें रक्त जांच, कैंसर की प्रारंभिक पहचान एवं निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श जैसी सेवाएं प्रदान की जाएंगी। इस अवसर पर विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम उपस्थित रहेगी, जो लोगों को आवश्यक जानकारी और निदान प्रदान करेगी।

जिले में सहायक विकास विस्तार अधिकारी परीक्षा 15 जून को, दिशा-निर्देश जारी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल रायपुर द्वारा सहायक विकास विस्तार अधिकारी (ष्ठश्वह्र) की भर्ती परीक्षा 15 जून 2025 दिन रविवार को आयोजित की जाएगी। यह परीक्षा प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 12:15 बजे तक जिले के 09 परीक्षा केंद्रों में आयोजित होना नियत है। अतएव उक्त परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों हेतु निम्नानुसार दिशा-निर्देश जारी किया जाता है। परीक्षा दिवस को प्रत्येक परीक्षार्थी एक घंटे पूर्व अपने परीक्षा केन्द्र में उपस्थित हो, जिससे उनके मूल पहचान पत्र से उनका पहचान किया जा सकें एवं परीक्षा केन्द्र में जाने हेतु अनुमति दी जा सके। परीक्षार्थी परीक्षा दिवस से एक दिवस पूर्व अपने परीक्षा केन्द्र की भौगोलिक स्थिति से भली-भांति परिचित हो जाये। परीक्षा प्रारंभ होने के पश्चात् किसी भी परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं दिया जायेगा। परीक्षार्थियों को अपना फोटो युक्त मूल आई.डी. प्रूफ जैसे मतदाता पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पेन कार्ड, आधार कार्ड, पासपोर्ट, विद्यालय का फोटोयुक्त परिचय पत्र, फोटोयुक्त अंकसूची मूलरूप में फोटो कॉपी मान्य नहीं होगा । वही परीक्षा दिवस अवसर पर सभी मूल दस्तावेज को परीक्षा केन्द्र में लाना अनिवार्य होगा। मूल पहचान पत्र के अभाव में परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं दिया जायेगा। परीक्षार्थियों को परीक्षा केन्द्र में मोबाइल एवं अन्य डिवाईस ले जाना वर्जित है।

बॉयफ्रेंड ने पूछा- किससे प्यार करती हो, गर्लफ्रेंड बोली- किसी से नहीं, फिर जंगल में जबरदस्ती किया रेप

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (निप्र)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में नाबालिग गर्लफ्रेंड और उसका बॉयफ्रेंड 4 साल से रिलेशनशिप में थे। लेकिन अचानक दूसरे नाबालिग लड़के ने एंट्री मारी। उसे पसंद करने की बात कही। हालांकि लड़की ने उसका प्रपोजल ठुकरा दिया। लेकिन वो बातचीत करने के लिए फोन करता था।

इसी बीच नाबालिग से मिलने के लिए उसका प्रेमी घर आया। इसी दौरान दूसरा नाबालिग भी चार्जर लेने के लिए पहुंच गया। बातचीत करने के लिए तीनों जंगल गए, जहां बॉयफ्रेंड ने पूछा- किससे प्यार करती हो, गर्लफ्रेंड बोली- किसी से नहीं। जिसके बाद उसके साथ मारपीट कर रेप किया। अब शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। घटना कापू थाना क्षेत्र की है।

दरअसल, 16 साल की नाबालिग की साल 2021 में टाकपानी के रहने वाले संदीप तिर्की (19) से जान-पहचान हुई थी। संदीप अपनी मौसी के घर अक्सर आया करता था। दोनों एक दूसरे को पसंद करने लगे और बातचीत होने लगी।

संदीप ने उससे शादी करने की बात कही। इसके बाद दिसबंर 2021 और अप्रैल 2025 में कई बार घर से बाहर ले जाकर संदीप ने नाबालिग के साथ शारीरिक संबंध बनाए।

इसी बीच लड़की की लाइफ में दूसरे नाबालिग लड़के की एंट्री हुई। उसने उसे पसंद करने की बात कही। तब लड़की ने कहा कि, मैं तुम्हें नहीं जानती हूं। उसने संदीप के बारे में पूछा, तो उसे भी नहीं जानने की बात कही। इसी दौरान किसी बात को लेकर संदीप और उसकी प्रेमिका के बीच विवाद हो गया। जिसके बाद उसने संदीप से बात करनी बंद कर दी।

इस बीच आए दिन नाबालिग लड़का उससे मोबाइल पर बात करने के लिए कॉल करता था। शुक्रवार 6 जून को वो चार्जर लेने के लिए लड़की के घर पहुंचा। तब संदीप पहले से वहां मौजूद था। इसके बाद दोनों उसे जंगल ले गए। जहां संदीप अपनी प्रेमिका से पूछने लगा कि, वो किससे प्यार करती है। जिस उसने कहा कि किसी से नहीं, फिर उनके बीच विवाद हो गया।

संदीप ने अपनी प्रेमिका और नाबालिग लड़के के साथ गाली-गलौज करने लगा। प्रेमिका के साथ मारपीट करने लगा, यह देख दूसरा लड़का वहां से भाग गया। इसके बाद संदीप ने उसके साथ दुष्कर्म किया, फिर उसे जंगल में ही छोड़कर चला गया।

वारदात के बाद पीड़िता किसी तरह घर पहुंची। उसने घटना की जानकारी परिजनों को दी। जिसके बाद उसने परिवार के साथ कापू थाने पहुंचकर संदीप के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई।

इस मामले में डीएसपी सुशांतो बनर्जी ने बताया कि, आरोपी संदीप ने शादी का झांसा देकर कई बार नाबालिग से शारीरिक संबंध बनाया था। 6 जून को जंगल ले जाकर जबरदस्ती मारपीट कर दुष्कर्म भी किया। शिकायत के बाद उसे गिरफ्तार लिया गया है। आगे की जांच जारी है।

शहीद आकाश राव का पार्थिव शरीर घर लाया गया, मेयर से लेकर मुख्यमंत्री तक श्रद्धांजलि देने पहुंचे

तिरंगे में लिपटे पति को देख रोती रही पत्नी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। सुकमा के कोंटा में नक्सलियों के IED ब्लास्ट में एएसपी आकाश राव गिरिपुंजे शहीद हो गए हैं। वे मूल रूप से रायपुर के रहने वाले थे। तिरंगे में लिपटा उनका पार्थिव शरीर सोमवार शाम घर लाया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय समेत कई मंत्री भी श्रद्धांजलि देने पहुंचे।

मेयर मीनल चौबे भी ASP आकाश राव को नमन करते दिखीं। तिरंगे में लिपटे पार्थिव शरीर के पहुंचते ही सभी की आंखें नम हो गई। शहीद की पत्नी और परिजनों के आंसू नहीं थम रहे थे।

दरअसल, नक्सलियों ने कल यानी 10 जून को भारत बंद का आह्वान किया था। इससे पहले नक्सलियों ने दहशत फैलाने के लिए खदान में एक JCB में आग लगा दी थी। खबर के बाद एएसपी आकाश राव अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे थे।

इस दौरान वह खदान में जली हुई JCB के पास गए। जैसे ही वह मशीन के पास पहुंचे। नक्सलियों ने IED ब्लास्ट कर दिया, जिसकी चपेट में तीनों पुलिस अधिकारी आ गए। घायल टीआई सोनल ग्वाला बिलासपुर के रहने वाले हैं। उनकी पत्नी हाउस वाइफ हैं। उनकी 2 जुड़वां बेटी भी हैं।

इस बीच शहीद आकाश राव का एक पुराना वीडियो भी सामने आया है, जिसमें वे IPS दोस्त की शादी में गाना गाते दिखे थे। आकाश राव गिरिपुंजे की जिंदादिली का यह वीडियो काफी पसंद किया गया था। यह वीडियो 3 साल पहले IPS अफसर रत्ना सिंह की शादी समारोह का है। शादी में आए एडिशनल एसपी आकाश राव माइक थामकर गाना गाने लगे। गाने पर साथी पुलिसकर्मी खूब झूमे थे।

आकाश राव गिरिपुंजे 42 साल के थे। उनका जन्म रायपुर में 7 फरवरी 1983 को हुआ था। वह रायपुर के रहने वाले थे। 2013 बैच के पुलिस अधिकारी थे। पिता गोविंद राव गिरिपुंजे, माता मंदा गिरिपुंजे, पत्नी स्नेहा गिरिपुंजे, बेटे सिद्धांत गिरिपुंजे और बेटी का नाम पीहू गिरिपुंजे है। वहीं उनकी तैनाती चंद्रशेखर आजाद पुलिस अकादमी चंदखुरी, रायपुर, कांकेर, राजनांदगांव, मानपुर, मोहला, दुर्ग, रायपुर, महासमुंद और वर्तमान में सुकमा के कोंटा में रही। वहीं वह ढ्ढश्वष्ठ की चपेट में आकर शहीद हो गए।

छोटे भाई को जमीन देने पर हुआ खूनी संघर्ष

बिलासपुर में मंझले भाई ने पत्नी-बेटों के साथ मिलकर बड़े भाई को मार डाला

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)।छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में जमीन विवाद के चलते मंझले भाई ने बड़े भाई की हत्या कर दी। भाई ने अपनी पत्नी और तीन बेटों के साथ लाठी, सब्बल से पीट-पीटकर बड़े भाई को मार डाला। वारदात रविवार की रात को हुई। घटना हिर्री थाना क्षेत्र की है।

पुलिस ने आरोपियों को पकड़ लिया है और पूछताछ कर रही है। बिलासपुर में एक दिन में 2 लोगों की हत्या हो गई है। रविवार सुबह ही सकरी थाना क्षेत्र में पति ने पत्नी पर तवा से ताबड़तोड़ वार कर हत्या कर दी थी। बच्ची की छट्ठी मनाने को लेकर दोनों के बीच विवाद हुआ था।

हिर्री मामले में टीआई अवनीश पासवान ने बताया कि, मृतक फेंकूराम ध्रुव ग्राम खरकेना गांव का रहने वाला था। उसके 2 भाई लेखूराम और नारद गांव में ही रहते हैं। उनकी जमीन का बंटवारा हो चुका है। लेकिन, नारद का पट्टा में नाम नहीं है इसके चलते मंझला भाई लेखूराम उसे हिस्सा नहीं देना चाहता था। जबकि, बड़ा भाई फेंकूराम छोटे भाई नारद को हिस्सा देने पर अड़ा था। इसी को लेकर उनके बीच विवाद चल रहा था। रविवार की रात जमीन की हिस्सेदारी को लेकर उनके बीच विवाद हुआ। इस दौरान हिस्सा देने से मना करते हुए लेखूराम ने अपने बड़े भाई फेंकूराम से गाली-गलौज की और फिर देखते ही देखते लेखूराम की पत्नी महेशिया ध्रुव, बेटा मिलाप ध्रुव, ईश्वर ध्रुव और नाबालिग बेटा भी आ गए।

इस दौरान मंझले भाई और उसकी पत्नी और बेटों ने मिलकर फेंकूराम पर लाठी-डंडे से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। इसी बीच एक बेटे ने सब्बल निकाल कर उसके पेट में घोंप दिया, जिससे फेंकूराम गंभीर रूप से घायल हो गया। इस वारदात के बाद परिजन उसे अस्पताल लेकर गए, जहां उसकी मौत हो गई।

टीआई पासवान ने बताया कि वारदात की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। अस्पताल में शव का पंचनामा कार्रवाई के बाद पूछताछ की गई, जिसके बाद सभी आरोपियों की धरपकड़ करते हुए उन्हें हिरासत में ले लिया गया है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

रीवा/सतना की खबरें

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत किसानों के लिये लगाया गया शिविर

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज जिले के सभी विकासखण्डों में विकसित कृषि संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत नईगढ़ी विकासखण्ड में ग्राम तिवरिगवां मनबोध सिंह तथा बदौआ में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत शिविर लगाया गया। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि शिविर में कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि सभी किसान अपने खेत की मिट्टी की जाँच कराकर उसका स्वाइल हेल्थकार्ड बनवाएं। इसके अनुसार ही खेत में फसल लें। कार्ड में दी गई मात्रा के अनुसार फसल में खाद का उपयोग करें। मिट्टी में यदि किसी पोषक तत्व की कमी है तो उसे अतिरिक्त रूप से फसल के साथ दें। किसानों को मछलीपालन, पशुपालन, उद्यानिकी फसलों, सिंचाई प्रबंधन बीजोपचार, कीट प्रबंधन, फसल विविधीकरण तथा जैविक खेती की भी जानकारी दी गई। किसानों को घर तथा आसपास उपलब्ध सामग्री से जैविक कीटनाशक बनाने की भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनधि तथा किसान शामिल हुए।

मैहर जिले में आगामी बरसात में 10 लाख पौधों के रोपण की तैयारी करें

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मैहर जिले में आगामी बरसात में 10 लाख पौधों का रोपण किया जायेगा। वृहद वृक्षारोपण अभियान के लिए सभी आवश्यक तैयारियां बरसात के पहले पूर्ण कर लें। जल गंगा संवर्धन अभियान, विकसित कृषि संकल्प अभियान, वृक्षारोपण अभियान जनप्रतिनिधि और आमजन की भागीदारी से सफ्लतापूर्वक रि यान्वित किये जाये। इस आशय के निर्देश प्रदेश शासन की पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री एवं मैहर जिले की प्रभारी मंत्री श्रीमती राधा सिंह ने सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार मैहर में संपन्न विभागीय कार्यो की समीक्षा बैठक में दिये। इस मौके पर सांसद सतना श्री गणेश सिंह, विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, जिलाध्यक्ष कमलेश सुहाने, जिला पंचायत की वन समिति के सभापति हरीशकांत त्रिपाठी, कलेक्टर रानी बाटड, पुलिस अधीक्षक सुधीर अग्रवाल, सीईओ जिला पंचायत संजना जैन, अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह, एसडीएम विकास सिंह, डॉ. आरती सिंह सहित विभाग प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे। जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा में सीईओ जिला पंचायत संजना जैन ने जिले में जन सहभागिता और जन सहयोग से किये जा रहे अभियान के कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मैहर जिले की 245 ग्राम पंचायतों में पिछले वर्ष के 183 खेत-तालाब, 114 चेक स्टाप डैम, 222 रिचार्ज पिट का कार्य पूर्ण करने का लक्ष्य लिया गया है। इस अभियान में 607 खेत-तालाब, 319 डग बेल रिचार्ज के नवीन कार्य भी लिये गये हैं। बरसात में वृक्षारोपण में प्रत्येक जनपद एक लाख के मान से तीन जनपदों में 3 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में रखा गया है। वृक्षारोपण के लिए 418 साइट का चयन कर मुकुंदपुर नर्सरी और कुसेडी नर्सरी में पौधे तैयार किये जा रहे हैं। वाटर बाडीज के पास वृक्षारोपण के लिए 85 हजार सीड बाल्स भी तैयार कर ली गई है। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण में 2843 पुराने आवास और 6814 नवीन आवास कुल मिलाकर 9657 आवास का लक्ष्य रखा गया है। जिनमें 8419 आवास स्वीकृत है। जिनमें 531 पूर्ण कर लिये गये हैं।

सांसद श्री सिंह ने कहा कि वृहद सीमेंट संस्थानों और माइनिंग एरिया होने से मैहर जिले में कम से कम 10 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा जाये। अभियान से आमजनों को जोडे और उन्हें पौधों की सुरक्षा की जिम्मेदारी दें। तभी वृक्षारोपण अभियान सफ्ल होगा। वन विभाग द्वारा बताया गया कि मैहर जिले में 2.77 लाख पौधों का रोपण किया जायेगा। इसके अलावा मैहर की मां शारदा पहाडी पर सघन वृक्षारोपण किया जायेगा। विकसित कृषि संकल्प अभियान की जानकारी में उप संचालक कृषि मनोज कश्यप ने बताया कि मैहर जिले में 29 मई से 12 जून तक चलने वाले अभियान में अब तक 99 ग्राम पंचायतों में कार्यर् म कर 7204 किसानों को सामयिक सलाह दी गई। इन कार्यर् मों में 970 अधिकारी और 136 जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। उप संचालक कृषि ने बताया कि मैहर जिले में आगामी खरीफमौसम में कुल 99 हजार 500 हेक्टेयर क्षेत्राच्छादन का लक्ष्य रखा गया है। जिसमें 83 हजार 500 हेक्टेयर धान और 5100 हेक्टेयर मोटे अनाज मिलाकर 88 हजार 851 हेक्टेयर में अनाज, 6350 हेक्टेयर में दलहन, 4299 हेक्टेयर में तिलहन का क्षेत्राच्छादन शामिल है। जिले में 8736 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड दिये गये हैं तथा 2261 मिट्टी के नमूने जांच के लिए गये हैं। अधीक्षण यंत्री विद्युत पीके मिश्रा ने बताया कि मैहर जिले में 92 घरेलू फीडर, 51 कृषि फीडर और 281 मिश्रित फीडर है। मैहर जिले में 8133 ट्रांसफ्र स्थापित है। जिनमें 291 बंद और खराब है। 242 ट्रांसफार्मर बदले गये हैं। 49 शेष ट्रांसफार्मर में 22 पात्र और 27 अपात्र है। अधीक्षण यंत्री ने बताया कि मैहर जिले की कोई भी नल जल योजना विद्युत आपूर्ति के कारण बंद नहीं है। विद्युत देयक बकाया होने पर भी नल जल योजना का विद्युत कनेक्शन विच्छेद नहीं किया जाता है।

प्रभारी मंत्री ने किया षासकीय महाविद्यालय बदेरा का लोकार्पण

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। प्रदेश की पंचायत और ग्रामीण विकास राज्यमंत्री और मैहर जिले की प्रभारी मंत्री श्रीमती राधा सिंह ने सोमवार को मैहर के प्रवास के दौरान बदेरा में शासकीय महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर सांसद गणेश सिंह, विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, जिलाध्यक्ष कमलेश सुहाने, कलेक्टर रानी बाटड, सुधीर अग्रवाल, वन समिति के सभापति हरीशकांत त्रिपाठी, जिला पंचायत सदस्य जयंती महेश तिवारी, सत्यभान पटेल, अध्यक्ष जनभागीदारी समिति शिवदयाल प्रजापति एवं महाविद्यालय के प्राचार्य तथा शैक्षणिक स्टाफउपस्थित रहा। प्रभारी मंत्री श्रीमती राधा सिंह ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यर् म की शुरूआत की और फीता काटकर नवनिर्मित महाविद्यालय भवन का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए शैक्षणिक संस्थायें एवं तकनीकी संस्थाओं के उन्नयन पर विशेष जोर दे रही है। प्रभारी मंत्री ने कहा कि मैहर से दूरस्थ क्षेत्र बदेरा में महाविद्यालय के सर्वसुविधायुक्त भवन मिल जाने से आस-पास के क्षेत्र के विद्यार्थियों खासकर बालिकाओं को उच्च शिक्षा की सुविधा मिल सकेगी। कार्यर् म को सांसद गणेश सिंह और विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी ने भी संबोधित किया।

शिलॉन्ग पुलिस ने सोनम को कस्टडी में लिया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की शिलॉन्ग में हत्या के आरोप में उनकी पत्नी सोनम और 5 संदिग्धों को पकड़ा गया है। सोनम रविवार देर रात 3 बजे यूपी के गाजीपुर के एक ढाबे पहुंची थी। ढाबा संचालक ने पुलिस को सूचना दी। बाकी 5 आरोपियों को मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के साथ अलग-अलग जगह रात भर डाली गईं रेड में पकड़ा गया। एमपी के बीना से आनंद को, इंदौर से राज कुशवाहा, विशाल चौहान, आकाश राजपूत और उत्तरप्रदेश के ललितपुर से आकाश लोधी को हिरासत में लिया गया। मेघालय एसआईटी के चीफ हर्बर्ट पिनियाड खारकोंगोर ने बताया कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि राजा पर धारदार हथियार से हमला किया गया था। उसके सिर पर दो चोटें आई थी। इस बीच शाम को मेघालय के शिलॉन्ग से दो लेडीज पुलिस अफसर गाजीपुर पहुंचीं हैं। सखी वन-स्टॉप सेंटर में सोनम रघुवंशी से पुलिस अफसरों की मुलाकात हुई। इसके बाद सोनम को अपनी कस्टडी में ले लिया। उसे शिलॉन्ग ले जाया जा रहा है। सोनम के परिवार का कहना है कि उनकी बेटी बेगुनाह है। राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी 23 मई को मेघालय के ईस्ट खासी हिल्स जिले के सोहरा क्षेत्र से लापता हो गए थे। 2 जून को राजा का शव एक खाई में मिला, जबकि उनकी पत्नी सोनम की तलाश जारी थी।

गोवा के स्वास्थ्य मंत्री ने डॉक्टर से माफी मांगी

पणजी (एजेंसी)। गोवा के स्वास्थ्य मंत्री विश्वजीत राणे ने गोवा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल में एक डॉक्टर से बदसलूकी करने के मामले में सोमवार को माफी मांग ली। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क पर कहा कि मैंने हीट ऑफ द मूमेंट में जिस तरह से स्थिति को हैंडल किया, उसका मुझे बहुत दुख है। दरअसल, स्वास्थ्य मंत्री राणे ने 7 जून को सीएमसीएच का औचक निरीक्षण किया था। इस दौरान उन्होंने ड्यूटी पर तैनात डॉ. रुद्रेश कुट्टीकर पर मरीजों के साथ गलत व्यवहार करने का आरोप लगाया और सबके सामने फटकार लगाई। उन्होंने डॉक्टर को सस्पेंड करने का आदेश भी दे दिया था। हालांकि, गोवा सरकार ने सस्पेंशन वापस ले लिया है।

घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इसमें स्वास्थ्य मंत्री राणे ने डॉक्टर की तरफ उंगली दिखाते हुए कहा था, आप अपनी जुबान पर काबू रखना सीखिए, आप डॉक्टर हैं। मैं आमतौर पर अपना आपा नहीं खोता, लेकिन आपको मरीजों से ठीक से व्यवहार करना होगा।

स्वास्थ्य मंत्री बोले- समाज में डॉक्टरों का दर्जा महान स्वास्थ्य मंत्री ने डॉक्टर से माफी मांगते हुए अपने पोस्ट में लिखा, हमारे समाज में डॉक्टरों का दर्जा पवित्र और महान है। वे लोगों की जान बचाने के लिए बहुत मेहनत करते हैं। मैंने अपने बात रखने के तरीके में गलती की होगी, लेकिन मेरा इरादा बस इतना था कि किसी भी मरीज को समय पर देखभाल मिलने में देरी न हो।

कृषि आधारित उद्योग लगाने पर मिलेगी 50 प्रतिशत सब्सिडी : मुयमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि उनका और राज्य सरकार का गाडरवारा के नागरिकों के साथ विकास और विश्वास का रिश्ता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के किसानों को कृषि आधारित उद्योग लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। कृषि उद्योग समागम मेला भी लगाए जा रहे हैं। कृषि आधारित उद्योग लगाने वाले किसानों को 50 प्रतिशत तक की सब्सिडी दी जाएगी। कृषि उद्योग से जुड़े रोजगार परक कारखाने बनायेंगे, जहां काम करने वाले को 5 हजार रुपये महिने भी दिये जायेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गाडरवाड़ा में गौशाला निर्माण किए जाने और प्रदेशवासियों को सुगम परिवहन सेवा भी उपलब्ध करवाने की भी घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को नरसिंहपुर जिले के गाडरवाड़ा में 80 करोड़ रूपये से अधिक के निर्माण और विकास कार्यों का भूमिपूजन तथा

लोकार्पण करने के बाद जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास की नई ऊंचाईयों को छू रहा है। विश्व में देश का मान-सम्मान बढ़ा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के सेवा एवं सुशासन के 11 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। विकास की नई उपलब्धियां सभी के सामने हैं। उनके कार्यकाल में तीन तलाक का कानून पास हुआ, जिसके क्रियान्वयन में कहीं भी कोई विरोध नहीं हुआ। धारा 370 हटाने पर देश के अंदर एक आनंद का माहौल रहा। पहलगांव की घटना में पूरा देश एकजुट हुआ और पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया गया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अयोध्या में भगवान श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा कर देश में सनातन संस्कृति को नई ऊंचाई प्रदान की।

बेंगलुरु में इंजीनियर ने प्रेमिका को 17 बार चाकू मारा

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु से हत्या की दो घटनाएं सामने आई हैं। टेक इंजीनियर यशस (25 साल) ने अपनी प्रेमिका हरिनी (33 साल) की चाकू मारकर हत्या कर दी। घटना 6-7 जून की रात पूर्णा प्रजना लेआउट के ओवॉयओ होटल के कमरे में हुई। दोनों एक-दूसरे को एक महीने से जानते थे। डीसीपी साउथ लोकेश बी जगलासर ने बताया कि महिला आरोपी से रिश्ता खत्म करना चाहती थी और दूरी बना रही थी। इसी बात से गुस्साए आरोपी यशस ने उसपर चाकू से 17 बार हमला किया। इससे उसकी मौत हो गई।

ठाणे में लोकल से यात्री गिरे-4 की मौत, 13 घायल

ठाणे (एजेंसी)। मुंबई के मुंब्रा रेलवे स्टेशन के नजदीक सोमवार सुबह चलती लोकल ट्रेनों से 10 यात्री नीचे गिर गए। इनमें से 4 की मौत हो गई, जबकि 13 घायल हो गए। मरने वालों में जीआरपी कॉन्स्टेबल भी शामिल है। ये सभी ट्रेन के गेट पर खड़े थे। घटना सुबह 9:30 बजे मुंब्रा के आगे दिवा और कोपर रेलवे स्टेशनों के बीच हुई। ऑफिस टाइम होने के कारण ट्रेन में भीड़ ज्यादा थी, जिससे यह हादसा हुआ। रेलवे के मुताबिक संभवत: ये यात्री ट्रेनों के फुटबोर्ड से लटके हुए थे। विपरीत दिशा में ट्रेनों के नजदीक से गुजरने के समय उनके बैग एक-दूसरे से टकरा गए। पहले खबर आई थी कि हादसा लखनऊ जाने वाली पुष्पक एक्सप्रेस के यात्रियों के साथ हुआ है। यह

ट्रेन मुंबई में छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) से सुबह करीब 8.30 बजे रवाना हुई थी और घटनास्थल से हादसे के कुछ वक्त बाद गुजरी थी। मुंब्रा रेलवे हादसे पर सेंट्रल रेलवे के सीपीआरओ स्वप्निल धनराज नीला ने बताया, यह हादसा मुंब्रा और दिवा स्टेशनों के बीच डाउन/फास्ट लाइन पर हुआ।

अमरनाथ यात्रा-पहलगाम रूट पर फेस रिक्गनिशन सिस्टम

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने अमरनाथ यात्रा के पहलगाम रूट पर फेस रिक्गनिशन सिस्टम लगाया है।यह सिस्टम ब्लैक लिस्टेड लोगों और घाटी में एक्टिव आतंकियों के कैमरे में आते ही सुरक्षा बलों को अलर्ट करेगा, ताकि तीर्थयात्रियों पर किसी भी तरह के आतंकवादी हमले को रोका जा सके। इसके लिए आतंकियों और संदिग्ध ओवरग्राउंड वर्कर्स की तस्वीरें इस सिस्टम में अपलोड की गई हैं।बालटाल रूट पर भी यह सिस्टम लगाए जा रहे हैं। एफआरएस डिजिटल तस्वीरों या वीडियो से चेहरे एनालिसिस करके, डेटाबेस

से मिलाकर व्यक्ति की पहचान करता है। यह फैसला 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद आया है। बायसरन घाटी में हुए आतंकी हमले में 26 पर्यटक मारे गए थे। 3 जुलाई से 9 अगस्त तक चलने वाली यात्रा पहली बार 38 दिन की हो रही है।

केरल में सिंगापुर के कार्गो शिप में आग लगी

कोच्चि (एजेंसी)। केरल के कोच्चि में सिंगापुर के कार्गो शिप एमवी डब्ल्यूएएन एचएआई 503 में सोमवार सुबह आग लग गई। कार्गो श्रीलंका के कोलंबो पोर्ट से 7 जून को रवाना हुआ था। इसे 10 जून को नवी मुंबई के जवाहरलाल नेहरू पोर्ट (न्हावा शेवा पोर्ट) पहुंचना था।

इंडियन कोस्ट गार्ड के मुताबिक घटना के दौरान कार्गो पर 18 क्रू मेंबर्स सवार थे। इनमें से 4 मेंबर्स लापता बताए जा रहे हैं, 5 घायल हैं। न्यू मंगलौर के पास इंडियन कोस्ट गार्ड के शिप- राजदूत, अर्नवेश, सचेत, समुद्र प्रहरी, राजदूत और सी-144 रेस्क्यू में जुटे हैं।

इंडियन नेवी का आईएनएस सूरत भी ऑपरेशन में शामिल है। कोच्चि के नेवी एयर स्टेशन आईएनएस गरुड़ से नेवी डोर्नियर प्लेन

की मदद की लेने की तैयारी की जा रही है।

डिफेंस के अधिकारियों के मुताबिक, सोमवार सुबह 10.30 मुंबई मैरीटाइम ऑपरेशन सेंटर ने कोच्चि के मैरीटाइम अधिकारियों के कार्गो में आग लगने की जानकारी दी थी। पहले धमाके की बात कही गई थी, लेकिन ऐसा नहीं है। कार्गो के अंडर डेक में आग लगी है। वह अभी भी समुद्र में बह रहा है।

आतंकी तहव्वुर राणा को परिवार से बात करने की परमिशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर हुसैन राणा की याचिका पर आज दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में सुनवाई हुई। राणा को अपने परिवार से बात करने की परमिशन मिल गई है। मामले की सुनवाई स्पेशल एनआईए जज चंद्र जीत सिंह ने की। राणा फिलहाल अपने परिवार को केवल एक बार फोन कर सकेगा। यह कॉल जेल के नियमों के अनुसार और तिहाड़ जेल के अधिकारी की निगरानी में की जाएगी। कोर्ट ने जेल अधिकारियों से रिपोर्ट भी मांगी है, जिसमें पूछा गया है कि क्या राणा को भविष्य में नियमित फोन कॉल की अनुमति दी जानी चाहिए। इससे पहले 24 अप्रैल को कोर्ट ने राणा की याचिका खारिज कर दी थी। राणा के वकील पीयूष सचदेवा ने कहा था कि एक विदेशी नागरिक के तौर पर उसे परिवार से बात करने का अधिकार है और उसके इलाज को लेकर परिवार चिंतित है। लेकिन एनआईए ने जांच का हवाला देकर इसका विरोध किया था, जिसके बाद कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी थी। आरोपी राणा 9 जुलाई तक एनआईए की हिरासत में है। 28 अप्रैल को पिछली सुनवाई में उसकी कस्टडी 12 दिन के लिए बढ़ा दी गई थी।

मणिपुर हिंसा- नेशनल हाईवे बंद, दवाएं तक नहीं मिल रहीं

चुराचांदपुर/इंफाल (एजेंसी)। सीबीआई ने जिस मैतेई नेता को एक दिन पहले गिरफ्तार किया, वह अशेम कनन सिंह मणिपुर पुलिस में हेड कांस्टेबल था। मणिपुर पुलिस ने सोमवार को बताया कि आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने के कारण कनन सिंह को मार्च में सस्पेंड कर दिया गया था। मैतेई संगठन अरम्बई टेंगोल (एटी) का सदस्य कनन सिंह पुलिस में रहते हुए बॉर्डर पार हथियारों की तस्करी करता था। 2023 से चल रही मणिपुर हिंसा के दौरान कनन सिंह एडिशनल एसपी अमित के घर पर हमले का मुख्य आरोपी था, जहां उनका अपहरण कर उनके साथ मारपीट की गई थी। बंदूक तस्करी में अशेम कनन सिंह को पहली बार 2020 में सस्पेंड किया गया था। 27 फरवरी 2024 को उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई।

3 मार्च 2025 को सस्पेंड किया गया, सीबीआई ने कई महीनों की जांच के बाद ठोस सबूतों के आधार पर 7 जून को गिरफ्तार किया। कनन की गिरफ्तारी के बाद हिंसा भड़क गई। इंफाल के कई इलाकों में प्रदर्शनकारियों ने गाड़ियों में आग लगा दी, सड़कों पर टायर और पुराने फर्नीचर भी जलाए। प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प भी हुई। प्रदर्शनकारियों ने पेट्रोल डालकर खुद को जलाने की भी कोशिश की।

आईएसएस जाने से पहले शुभांशु शुक्ला की फाइनल रिहर्सल

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला एक्सिओम मिशन 4 के तहत कल 10 जून को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन जाएंगे। इससे पहले रविवार को शुभांशु ने फुल ड्रेस फाइनल रिहर्सल की। इसमें असेंबली बिल्डिंग से रॉकेट तक जाने और उसमें बैठने के प्रोसेस को फॉलो किया। इस दौरान शुभांशु ने कहा- यह एक बेहतरीन यात्रा रही है। ये पल बताते हैं कि आप किसी ऐसी चीज का हिस्सा

बनने जा रहे हैं जो आपके खुद से बहुत बड़ी है। मैं बस इतना कह सकता हूं कि मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि मुझे मिशन का हिस्सा बनने का अवसर मिला।

नड्डा बोले- पहले की सरकार भ्रष्टाचार-निगेटिविटी से भरी थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी सरकार के सोमवार को 11 साल पूरे हो गए। इस मौके पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सरकार के कामकाज, फैसलों और नीतियों पर भाजपा हेडक्वार्टर में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा- नोटबंदी के दौरान विपक्षी पार्टियां जनता को भड़का रही थीं, लेकिन लोग सरकार के सपोर्ट में लाइनों में लगे थे। लोगों को मोदी जी की लीडरशिप पर भरोसा था। नड्डा ने कहा- देश ने मान लिया था कि अनुच्छेद 370 हटाना मुमकिन नहीं है, लेकिन मोदी सरकार ने कर दिखाया। जम्मू-कश्मीर में लोकसभा चुनाव के दौरान 58.46 प्रतिशत

वोटिंग हुई, वहीं विधानसभा चुनाव में 63ब वोट पड़े। यह बदलाव मोदी सरकार के साहसी फैसले का नतीजा है।

करप्शन- यह एक पारदर्शी और भविष्य की सोच वाली सरकार है। 11 साल में विकसित भारत की नींव मजबूत हुई है। पहले की सरकार भ्रष्टाचार और निराशा के माहौल से भरी थी। 2014 के बाद माहौल पूरी तरह बदल गया। आज लोग गर्व से कहते हैं, मोदी है तो मुमकिन है। इकोनॉमी- पिछले 11 सालों में भारत दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में 10वें से 5वें नंबर पर पहुंच गया है। आईएमएफ के नए आंकड़ों के मुताबिक, अब हम चौथे स्थान पर पहुंचने वाले हैं। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना है। चुनाव में गड़बड़ी- विपक्ष को चुनावी प्रक्रिया पर सवाल उठाने से पहले सोचना चाहिए।

ओडिशा में आईएएस अफसर 10 लाख घूस लेते गिरफ्तार

भुवनेश्वर/भवानीपटना (एजेंसी)।ओडिशा के कालाहांडी जिले में 36 साल के आईएएस अफसर धीमान चकमा को 10 लाख घूस लेते रंगे हाथ पकड़ गया। सोमवार को उसे भवानीपटना में स्पेशल जज विजिलेंस ने 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। धीमान को रविवार को गिरफ्तार किया गया था। विजिलेंस अधिकारियों ने बताया कि धीमान ने एक बिजनेसमैन से 20 लाख की मांग की थी। रुपए नहीं देने पर उसके खिलाफ एक्शन लेने की धमकी भी दी। बिजनेसमैन ने विजिलेंस के अधिकारियों को मामले की सूचना दी। विजिलेंस टीम ने शिकायत के आधार पर 8 जून की रात को एक जाल बिछाया और आईएएस अफसर धीमान को कालाहांडी जिले के धरमगढ़ स्थित उसके सरकारी आवास से 10 लाख रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया।

बेंगलुरु भगदड़- आरसीबी-डीएनए की याचिका पर सुनवाई 12 जून को

बेंगलुरु। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ चिन्नास्वामी स्टेडियम में भगदड़ को लेकर दर्ज आपराधिक मामला रद्द करने पर सुनवाई 12 जून को होगी। फ्रेंचाइजी ने सोमवार को कर्नाटक हाईकोर्ट में याचिका लगाते हुए कहा था कि उसे इस मामले में झूठा फंसाया गया है। आरसीबी ने तर्क दिया है कि उस पर गलत आरोप लगाए गए हैं। सोशल मीडिया पर साफ बताया गया था कि एंट्री पास लिमिटेड हैं। स्टेडियम के गेट दोपहर 1:45 बजे खुलने वाले थे लेकिन दोपहर 3 बजे खोले गए, जिससे स्टेडियम के बाहर भीड़ बढ़ती गई।

दरअसल, बेंगलुरु में 4

जून को हुई भगदड़ में 11 लोगों की जान चली गई थी और 75 घायल हुए थे। एडवोकेट जनरल शशिकिरण शेट्टी ने अदालत से अपील करते हुए कहा कि भगदड़ मामले से जुड़ी सभी याचिकाओं पर 10 जून को एक साथ सुनवाई की जाए।

इवेंट आयोजक डीएनए एंटरटेनमेंट नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड ने भी अपने खिलाफ स्त्रङ्कको चुनौती देते हुए एक अलग याचिका दायर की है।

कंपनी का कहना है कि पुलिस भीड़ संभाल नहीं पाई। इस वजह से भगदड़ हुई। अब इन दोनों ही मामलों पर 12 जून को सुनवाई होगी।

आरसीबी के मार्केटिंग और रेवेन्यू हेड निखिल सोसले के वकील ने हाईकोर्ट में कहा- निखिल को इसलिए गिरफ्तार किया क्योंकि ष्टरू सिद्धारमैया ने सेंट्रल क्राइम ब्रांच को उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया था। कोर्ट 6 जून को हुई निखिल सोसले की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई कर रहा था।

राहुल ने पूछा- ईसी हरियाणा-महाराष्ट्र चुनाव डेटा कब शेयर करेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सोमवार को हरियाणा और महाराष्ट्र में 2009 से 2024 के दौरान हुए चुनावों का डेटा शेयर करने के चुनाव आयोग के फैसले की सराहना की। राहुल ने पूछा कि क्या चुनाव आयोग डिजिटल फॉर्मेट में डेटा सौंपने की तारीख बता सकता है। राहुल ने यह सवाल ङ्क पर एक पोस्ट के जरिए पूछा। उन्होंने 7 जून को पब्लिश एक मीडिया रिपोर्ट का स्क्रीनशॉट भी शेयर किया, जिसमें दावा किया गया है कि चुनाव आयोग ने 2025 की शुरुआत में दिल्ली हाईकोर्ट को 2009 से 2024 तक हरियाणा और महाराष्ट्र के वोटर्स लिस्ट का डेटा शेयर करने का आश्वासन दिया था।

हालांकि, चुनाव आयोग की ओर से इस पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। राहुल ने शनिवार को देश के दो दैनिक अखबारों में अपने लेख के जरिए 2024 के महाराष्ट्र

विधानसभा चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए चुनाव आयोग से जवाब मांगा था। आयोग के सूत्रों ने रविवार को कहा कि वह तभी जवाब देगा जब राहुल उन्हें डायरेक्ट लेटर लिखेंगे। राहुल ने कहा था- महाराष्ट्र की तरह बिहार में मैच फिक्सिंग होगी राहुल गांधी ने अखबारों में अपने लेख में कहा था कि- महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में %मैच फिक्सिंग% की गई थी, जिसमें पहले से भाजपा की जीत तय करने की पूरी कोशिश की गई। भाजपा और उसके सहयोगियों ने चुनाव जीतने के लिए 5 स्टेप की प्लानिंग की थी। राहुल ने ये भी कहा कि महाराष्ट्र की तरह ही मैच फिक्सिंग अगली बार बिहार में होगी, फिर किसी भी राज्य में जहां भाजपा हारती दिख रही हो। हालांकि, चुनाव आयोग ने राहुल के दावों को निराधार करार दिया और कहा कि चुनाव के फैसले पक्ष में नहीं आने के बाद ऐसे आरोप लगाना बेतुके हैं। इसके बाद राहुल ने चुनाव आयोग के जवाब देने के तरीके पर भी सवाल उठाए। राहुल ने शनिवार रात एक्स पर पोस्ट कर लिखा, %आप (चुनाव आयोग) एक संवैधानिक संस्था हैं। बिना साइन और टालमटोल वाले नोट जारी करके गंभीर सवालों के जवाब देने का तरीका सही नहीं है। अगर आपके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है, तो मेरे लेख में दिए गए सवालों के जवाब दें और इसे साबित करें।

साक्षप्त समाचार

सेंसेक्स की प्रमुख नौ कंपनियों के मार्केट कैप में एक लाख करोड़ का उछाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले सप्ताह शीर्ष 10 सूचीबद्ध कंपनियों में नौ के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में कुल 1,00,850.96 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। इसमें रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचडीएफसी बैंक ने सबसे ज्यादा बढ़त हासिल की। शीर्ष 10 कंपनियों में केवल टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) ही पिछड़ी रही। दूसरी ओर रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, इंफोसिस, भारतीय जीवन बीमा निगम, बजाज फाइनेंस और हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड को लाभ हुआ।रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 30,786.38 करोड़ रुपये बढ़कर 19,53,480.09 करोड़ रुपये हो गया। एचडीएफसी बैंक का मूल्यांकन 26,668.23 करोड़ रुपये बढ़कर 15,15,853.85 करोड़ रुपये पर रहा। बजाज फाइनेंस ने 12,322.96 करोड़ रुपये जोड़े, जिससे इसका मूल्यांकन 5,82,469.45 करोड़ रुपये हो गया। आईसीआईसीआई बैंक का बाजार पूंजीकरण (एमकैप) 9,790.87 करोड़ रुपये बढ़कर 10,41,053.07 करोड़ रुपये हो गया। इस अवधि में टीसीएस का मूल्यांकन 28,510.53 करोड़ रुपये घटकर 12,24,975.89 करोड़ रुपये रह गया। शीर्ष 10 कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे अधिक मूल्यवान कंपनी रही। इसके बाद एचडीएफसी बैंक, टीसीएस, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, इंफोसिस, एलआईसी, बजाज फाइनेंस और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा।

रुपया चार पैसे टूटकर 85.72 डॉलर पर

मुंबई (एजेंसी)। कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के दौरान सोमवार को रुपया शुरुआती कारोबार में चार पैसे की गिरावट के साथ 85.72 प्रति डॉलर पर आ गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा रेपो दर में आधा प्रतिशत की बड़ी कटौती से शुरुआत में रुपये को कुछ फायदा हुआ। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 85.61 प्रति डॉलर पर खुला। हालांकि, बाद में यह चार पैसे के नुकसान के साथ 85.72 प्रति डॉलर पर आ गया। शुक्रवार को रुपया 11 पैसे की बढ़त के साथ 85.68 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस बीच छह अन्य मुद्राओं की तुलना में अमेरिकी मुद्रा का आकलन करने वाला डॉलर सूचकांक 0.16 प्रतिशत की गिरावट के साथ 99.02 पर कारोबार कर रहा था।

शेयर बाजार मे रही तेजी, सेंसेक्स 400 से ज्यादा अंक चढ़ा, निटी 25100 के पार

मुंबई (ईएमएस)। अमेरिका और चीन के बीच लंदन में ट्रेड वार्ता होने और वैश्विक बाजारों से पॉजिटिव संकेतों के चलते भारतीय शेयर बाजार सोमवार को हफ्ते के पहले कारोबारी दिन मजबूती के साथ खुले। इसके अलावा भारतीय रिजर्व बैंक के रेपो रेट में 0.5 फीसदी की बड़ी कटौती और कैश रिजर्व रेश्यो घटाने के फैसले का भी बाजार पर पॉजिटिव असर दिख रहा है। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 300 से ज्यादा अंक चढ़कर 82,574.55 अंक पर खुला। खुलते ही इसमें तेजी देखी गई। शुरुआत के बाद यह 314.82 अंक बढ़कर 82,503.81 पर कारोबार कर रहा था। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 मजबूती के साथ 25 हजार के पार खुला। सुबह शुरुआत के बाद यह 91.05 अंक की बढ़त लेकर 25,111 पर कारोबार कर रहा था। इस बीच ग्लोबल मार्केट से ट्रेंड्स आज बाजार की चाल को प्रभावित करेंगे। इससे पिछले ट्रेडिंग सेशन यानी शुक्रवार को भारतीय शेयर बाजार में जोरदार तेजी रही। सेंसेक्स 747 अंककी बढ़त के साथ 82,189 पर बंद हुआ। निफ्टी 50 252 अंक चढ़कर 25,003 पर बंद हुआ। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शुक्रवार को भारतीय शेयरों में 1,009.71 करोड़ रुपए की खरीदारी की, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 9,342.48 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे। वहीं एशियाई बाजारों में सोमवार को तेजी रही। जापान का निक्केई 225 इंडेक्स 0.95 प्रतिशत चढ़ा और दक्षिण कोरिया का कोस्पी इंडेक्स1.73 प्रतिशत बढ़ा। ऑस्ट्रेलियाई बाजार सार्वजनिक अवकाश के कारण बंद हैं। अमेरिकी बाजारों में वॉल स्ट्रीट के प्रमुख इंडेक्स शुक्रवार को बढ़त के साथ बंद हुए। उम्मीद से बेहतर गैर-कृषि पेरोल डेटा ने आर्थिक मंदी की आशंकाओं को कम करने के चलते वॉल स्ट्रीट में तेजी आई। डाऊ जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज में 1.05 प्रतिशत की वृद्धि हुई, एसएंडपी 500 में भी 1.03 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा नैस्डैक कंपोजिट में 1.20 प्रतिशत की तेजी आई।

सोने-चांदी के भाव में गिरावट!

सोने का भाव गिरकर 96400 रुपए, चांदी 1 लाख के पार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सप्ताह के पहले दिन सोमवार को कारोबार के शुरुआत में सोने-चांदी के वायदा भाव में नरमी देखने को मिल रही है। चांदी के भाव मामूली तेजी के साथ खुलने के बाद लुढ़क गए। सोने के भाव की शुरुआत गिरावट के साथ हुई। घरेलू बाजार में सोने के भाव 96,400 रुपये, जबकि चांदी के भाव 1,05,200 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोना-चांदी नरमी के साथ कारोबार कर रहे हैं। सोने के वायदा भाव की शुरुआत गिरावट के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क जून कॉन्ट्रेक्ट 176 रुपये की गिरावट के साथ 96,860 रुपये के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 97,036 रुपये था। इस समय यह कॉन्ट्रेक्ट 638 रुपये की गिरावट के साथ 96,398 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क मई कॉन्ट्रेक्ट एक रुपये की मामूली तेजी के साथ 1,05,460 रुपये पर खुला। पिछला बंद भाव 1,05,459 रुपये था। इस समय यह 220 रुपये की गिरावट के साथ 1,05,239 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चांदी के वायदा भाव तेज शुरुआत के बाद लुढ़क गए। सोने की कीमतों में भी गिरावट देखने को मिल रही है। कॉमेक्स पर सोना 3,333.40 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 3,346.60 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 27.50 डॉलर की गिरावट के साथ 3,319.10 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोने के वायदा भाव ने इस साल 3,509.90 डॉलर के भाव पर ऑल टाइम हाई छू लिया है। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 36.16 डॉलर के भाव पर खुले। पिछला बंद भाव 36.13 डॉलर था। इस समय यह 0.02 डॉलर की गिरावट के साथ 36.11 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

नीरज चोपड़ा लासिक अंतर्राष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता अब पांच जुलाई को बेंगलुर में होगी

देश विदेश के कुल 12 खिलाड़ी होंगे शामिल होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीरज चोपड़ा क्लासिक अंतर्राष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता अब पांच जुलाई को बेंगलुरु में आयोजित की जाएगा। आयोजकों ने कहा है कि श्री कांतीरवा स्टेडियम में आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में 12 खिलाड़ी भाग लेंगे। इससे पहले ये प्रतियोगित 24 मई को होनी थी पर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने के कारण स्थागित कर दिया गया था। ये पहली बार है जब भारत में किसी अंतर्राष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता का आयोजन जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के सहयोग से किया जा रहा है और इसे भारतीय एथलेटिक्स महासंघ से भी मंजूरी मिली हुई है। इस टूर्नामेंट में देश विदेश के कुल 12 खिलाड़ी होंगे शामिल होंगे। इस टूर्नामेंट में नीरज चोपड़ा समेत पांच भारतीय सचिन यादव, किशोर जेना, रोहित यादव और साहिल सिलवाल शामिल होंगे। वहीं विदेश के सात सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में दो बार के विश्व चैंपियन ग्रेनेड के एंडरसन पीटर्स, जर्मनी के 2016 ओलंपिक स्वर्ग विजेता थॉमस रोहलर, कीनिया के 2015 के वर्ल्ड चैंपियन जूलियस येगो, अमेरिका के कर्टिस थॉम्पसन, जापान के एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता जेनकी डीन, श्रीलंका के रुमेश पथिरेज और ब्राजील के लुईज मौरिसियो दा सिल्वा शामिल हैं। इस प्रतियोगिता के लिए टिकट की कीमत 199 रुपये से लेकर 9,999 रुपये तक होगी। इसके अलावा 15 व्यक्तियों के लिए पांच कॉर्पोरेट बॉक्स 44,999 रुपये में उपलब्ध हैं। वहीं थ्रोअर रनवे के पास एक विशेष स्टैंड की कीमत 9,999 रुपये है, जबकि रनवे के ठीक पीछे स्थित नॉर्थ अपर स्टैंड में एक और विशेष स्टैंड 2,999 रुपये में है।

आरसीबी की जीत के जश्न में हुए हादसे की आंच विराट तक पहुंची

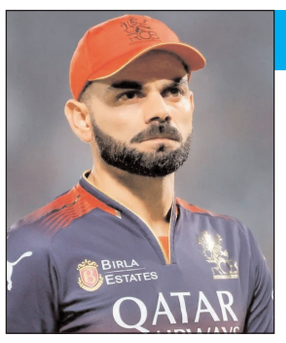

बेंगलुरु (एजेंसी)। यहां रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की जीत के जश्न के दौरान 11 लोगों की मौत के मामले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) प्रबंधन के बाद अब टीम के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली के खिलाफ भी शिकायत दर्ज की गयी है। इस मामले को आपराधिक लापरवाही कहा जा रहा है क्योंकि आरसीबी की जीत का जश्न अचानक ही मनाया गया और उसके लिए जरुरी इंतजाम नहीं किये गये। पुलिस ने इस कार्यक्रम के लिए सुरक्षा देने में असमर्थता जतायी थी पर इसके बाद भी उसपर दबाव बनाया गया। 18 साल बाद टीम की जीत के बाद बेंगलुरु की सड़कों पर जश्न का माहौल था। अगले दिन जैसे ही पूरी टीम ट्रॉफी के साथ शहर लौटी, स्टेडियम और विधानसभा के पास हजारों की भीड़ जमा हो गई। लोगों की संख्या इतनी अधिक थी कि पुलिस नियंत्रण नहीं बना पायी। इस घटना के लिए कर्नाटक सरकार ने आरसीबी प्रबंधन, कर्नाटक क्रिकेट संघ (केएससीए) और इवेंट आयोजित करने वाली डीएनए कंपनी को जिम्मेदार ठहराया। इसके बाद पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है आरसीबी के मार्केटिंग और रेवेन्यू हेड निखिल सोसाले, उनके साथी सुमंत, डीएनए कंपनी के मैनेजर किरण और उनके सहयोगी मैथ्यू। इन चारों को कोर्ट में पेश कर 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। वहीं बेंगलुरु के एक स्थानीय नागरिक वेंकटेश ने विराट के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज करने की मांग की है।

उनका आरोप है कि कोहली न केवल टीम का चेहरा हैं, बल्कि इस इवेंट के प्रमोशन से भी जुड़े थे, इसलिए उन पर भी जिम्मेदारी बनती है। शिकायत कब्बन पार्क पुलिस स्टेशन में दर्ज कराई गई है। पुलिस का कहना है कि शिकायत की जांच कर इसे पहले से दर्ज केस में जोड़ा जा सकता है। क्रिकेटर विराट कोहली के खिलाफ कब्बन पार्क पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई गई है। यह शिकायत वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता एच.एम. वेंकटेश ने दर्ज कराई है।

पुलिस में शिकायत दर्ज

राहुल के शतक से इंडिया ए ने बनाये सात विकेट पर 319 रन

नॉर्थम्पटन (एजेंसी)। केएल राहुल के शानदार शतक 116 रनों की सहायता से इंडिया ए ने इंग्लैंड लायंस के खिलाफ दूसरे अनाधिकारिक टेस्ट के पहले दिन सात विकेट पर 319 रन बना लिए थे। राहुल के अलावा ध्रुव जुरेल ने भी 52 रन बनाये। इस मैच में इंग्लैंड लायंस के कप्तान जेम्स यू ने टॉस जीतकर इंडिया ए को बल्लेबाजी के लिए बुलाया। इंडिया ए की शुरुआत अच्छी नहीं रही। तेज गेंदबाज क्रिस वोक्स ने शुरुआत में ही यशस्वी जायसवाल 17 और कप्तान अभिमन्यु ईश्वरन को 11 रनों पर ही आउट कर दिया। इसके बाद राहुल ने करुण नायर के साथ पारी को आगे बढ़ाया। करुण ने 40 रन बनाये।

बुमराह को कठिन स्थलों पर उतारें - आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने कहा है कि इंग्लैंड दौरे में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को बर्मिंघम और द ओवल सहित उन टेस्ट स्थलों में उतारना चाहिये जो कठिन हो। उन्होंने कहा कि बुमराह पर अधिक बोझ नहीं डालना है । साथ ही कहा कि उनका उपयोग वहां ज्यादा लाभप्रद रहेगा जहां हालात कठिन हों। भारतीय टीम 20 जून से हेडिंग्ले में इंग्लैंड के खिलाफ पहला टेस्ट खेलेगी। भारतीय टीम के मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ने भी हाल ही में घोषणा की थी कि बुमराह की फिटनेस को देखते हुए उनको लगातार नहीं उतारा जाएगा और वह तीन टेस्ट ही खेलेंगे। साथ ही कहा कि उनकी पीठ में स्ट्रेस रिएक्शन के कारण उन्हें आराम देना बेहद जरुरी है। इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी टेस्ट के दौरान उनकी पीठ में दर्द उभर गया था। बुमराह इसी कारण चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर थे। हाल ही में उन्होंने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में मुंबई इंडियंस की ओर से सफल वापसी की थी। वहीं भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर का कहना है कि बुमराह को हालातों के अनुसार उतारा जाएगा हालांकि ये अभी तय नहीं हुआ है कि वह किन-किन मैचों में खेलेंगे। ,आकाश ने सलाह दी कि बुमराह का इस्तेमाल मुश्किल हालातों में ही करना ठीक रहेगा। विशेष तौर पर देखा जाये तो बर्मिंघम और द ओवल का मैदान कठिन है और ऐसे में बुमराह का वहां खेलना ठीक रहेगा। चोपड़ा ने कहा कि कठिन हालात में आप अपने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को चाहते हैं। इसलिए उन मैचों में बुमराह को शामिल करना अच्छा होगा। जैसे आप को लक्ष्य का पीछा करते हुए बल्लेबाजी में विराट कोहली की जरुर पड़ती है वैसे ही बुमराह को मुश्किल हालातों में। बर्मिंघम और द ओवल की सपाट पिचों पर सफलता मिल सकती है, इस दौरान । यह फैसला बुमराह की फिटनेस पर भी काफी कुछ निर्भर करेगा। भारतीय टीम इस सीरीज में रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे दिग्गज बल्लेबाजों के बिना ही उतरेगी क्योंकि इन दोनो ने ही हाल में टेस्ट प्रारुप से संन्यास ले लिया था। टीम की कप्तानी युवा शुभमन गिल के पास रहेगी।

दिल्ली कैपिटल्स मुकेश और मैकगर्क को रिलीज करे - आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने कहा है कि दिल्ली कैपिटल्स को आईपीएल के अगले सत्र को देखते हुए जेक फ्रेजर-मैकगर्क और मुकेश कुमार को रिलीज कर देना चाहिये। चोपड़ा के अनुसार अनुभवी बल्लेबाज फाफ डुप्लेसिस का भी प्रदर्शन इस सत्र में अच्छा नहीं रहा है। ऐसे में उनको लेकर भी बात करने की जरुर है। । दिल्ली कैपिटल्स ने पहले 6 में से पांच मैच जीते थे पर इसके बाद टीम प्लेऑफ्स के लिए क्वॉलिफाई नहीं कर पाई। ऐसे में अब ये चर्चा हो रही है कि दिल्ली कैपिटल्स को आने वाले सीजन से पहले किस-किस खिलाड़ी को रिलीज कर देना चाहिए। चोपड़ा ने ये भी कहा है कि डुप्लेसिस के भविष्य को लेकर भी बात करना जरुरी है।

अगले सत्र में और भी बेहतर प्रदर्शन का प्रयास करुंगा - वैभव

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल के इस सत्र में राजस्थान रॉयल्य की ओर से शानदार प्रदर्शन कर सभी का दिल जीतने वाले 14 साल के उभरते हुए क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी ने कहा है कि अगले सत्र में वह और भी बेहतर प्रदर्शन करने उतरेंगे। इस बल्लेबाज ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ 35 गेंदों में ही 101 रनों की आक्रामक पारी खेलकर दिखाया था कि वह क्या कर सकते हैं। अपनी इस पारी के साथ ही वैभव ने आईपीएल इतिहास का सबसे तेज शतक और कुल मिलाकर दूसरा सबसे तेज शतक लगाया था। इस उपलब्धि से वह 14 साल और 32 दिन की उम्र में टी20 क्रिकेट में शतक बनाने वाला सबसे युवा पुरुष खिलाड़ी भी बन गये हालांकि राजस्थान रॉयल्स के लिए सत्र निराशाजनक रहा। वैभव ने भविष्य की योजनाओं को लेकर कहा है कि वह अपने पहले सत्र से सीख लेते हुए अपनी गलतियों को ठीक करते हुए अगले सत्र में उतरेंगे। एक वीडियो में वैभव ने कहा कि आईपीएल में खेलना हर किसी का सपना होता है। मुझे पहले सत्र से बहुत कुछ सकारात्मक मिला और मैंने यह भी सीखा कि अगले सत्र में टीम के लिए मैं क्या बेहतर कर सकता हूं। अगले साल मैं अपनी गलतियों पर काम करूंगा और टीम के लिए और बेहतर प्रदर्शन करूंगा। वैभव ने अपने पहले सत्र की समीक्षा करते हुए कहा कि मेरी सीख यह है कि मुझे इस बार पहले से भी अच्छा करना है ताकि अगले साल मेरी टीम फाइनल में पहुंचे। मैं इस बात पर ध्यान दूंगा कि मैं अपनी टीम के लिए कितना योगदान दे सकता हूं। वैभव को आगामी इंग्लैंड दौरे के लिए भारत की अंडर-19 टीम में शामिल किया गया है, जिसकी कप्तानी आयुष महात्रे करेंगे। वैभव ने कहा कि यह एक नया टूर्नामेंट है। मैं पहली बार इंग्लैंड दौरे पर जा रहा हूं, यह एक नया अनुभव होगा। इसके लिए तैयारी अच्छी चल रही है, और हम ट्रॉफी जीतने के इरादे से उतरेंगे।

तो संन्यास से वापसी के लिए विराट पर रहेगा दबाव - माइकल क्लार्क

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान माइकल क्लार्क ने कहा है कि अगर भारतीय टीम इंग्लैंड दौरे में सभी मैच हारती है तो अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली टेस्ट प्रारुप में बार फिर वापसी कर सकते हैं। विराट ने हाल ही में टेस्ट प्रारुप को अलविदा कह दिया था। उन्होंने अपने करियर में 123 टेस्ट खेलकर 30 शतक सहित 9230 रन बनाए हैं। क्लार्क ने 'कहा कि अगर भारतीय टीम इंग्लैंड दौरे में 5-0 से हार जाती है तो उनपर प्रशंसक संन्यास से वापसी का दबाव बनाकर फिर से खेलने को कहेंगे। साथ ही कहा कि अगर कप्तान, चयनकर्ता और प्रशंसक ऐसा चाहेंगे तो उन्हें वापसी करनी पड़ सकती है। इसका कारण है कि विराट को अभी भी टेस्ट क्रिकेट से प्यार है। उसके शब्दों में टेस्ट क्रिकेट के लिये उसका जुनून नजर आता है। आरसीबी के पहला आईपीएल खिताब जीतने के बाद कोहली ने कहा था कि टेस्ट क्रिकेट को वह सबसे ऊपर मानते हैं। इसलिए आईपीएल की जीत को वह टेस्ट क्रिकेट से 5 पायदान नीचे मानते हैं। क्लार्क ने कहा कि रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास के कारण अब टीम को उसके जैसे बेहतरीन कप्तान की कमी महसूस होगी। कोहली ने सबसय से पहले टेस्ट से संन्यास लिया। जिससे सभी को निराशा हुई है। साथ ही कहा कि वह चैम्पियन है इसलिए टेस्ट क्रिकेट को उसकी कमी का अनुभव होगा। क्लार्क ने आरसीबी की जीत के जश्न में बेंगलुरू में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों के प्रति संवेदना जताई। साथ ही कहा कि उम्मीद करते हैं कि ऐसा फिर कभी नहीं हो। मुझे लगता है कि खिलाड़ियों को प्रशंसकों के साथ जश्न मनाना चाहिए और इसमें कुछ गलत नहीं है। स्टेडियम पूरा भरा भी हो तो भी खिलाड़ियों को उसके भीतर ले जाकर एक चक्कर लगाना चाहिए। उन्होंने उम्मीद जतायी है कि इस घटना के बाद भी खिलाड़ियों और प्रशंसकों का साथ में जश्न मनाना बंद नहीं होगा।

शुभमन की कप्तानी में टेस्ट सीरीज के लिए इंग्लैंड पहुंची भारतीय टीम

लंदन (एजेंसी)। युवा बल्लेबाज शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए इंग्लैंड पहुंच गयी है। ये सीरीज 20 जून से शुरु होगी। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने टीम के लंदन पहुंचने का वीडियो भी जारी किया है। बीसीसीआई ने इसमें लिखा, टीम इंडिया इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए लंदन पहुंच गई है। इस वीडियो में भारतीय खिलाड़ी काफी तरोताजा नजर आ रहे हैं। टीम इस लंबे दौरे के लिए पूरी तरह से तैयार दिख रही है। इस दौरे के लिए भारतीय टीम में अधिकतर युवा खिलाड़ी शामिल हैं। आईपीएल में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी भी इस टीम में हैं।

वहीं इंग्लैंड रवाना होने से पहले शुभमन ने रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे दिग्गजों के बिना खेलने की चुनौतियों पर भी बात की थी। वहीं टीम पर दबाव को लेकर शुभमन ने कहा था, मुझे लगता है कि हर बार जब आप मैच खेलते हैं या दौरा शुरू करते हैं, तो दबाव होता है। ऐसे में हर सीरीज से पहले दबाव होता है, लेकिन यहां कोई अतिरिक्त दबाव नहीं होगा।उन्होंने साथ ही कहा, रोहित और विराट बहुत अनुभवी खिलाड़ी हैं और उनकी जगह भरना बहुत मुश्किल है, बतौर टीम हमारे पास बहुत अनुभव है। हमने बहुत सारे मैच खेले हैं। साथ ही कहा कि टीम के सभी खिलाड़ी दबाव में भी खेलना जानते हैं। साथ ही कहा कि हमारी टीम में बल्लेबाजी और गेंदबाजी का समन्वय बहुत अच्छा है।

वहीं बल्लेबाजी क्रम को लेकर शुभमन ने कहा कि अभी तक तय नहीं किया है कि वह किस नंबर पर बल्लेबाजी करेंगे। उन्होंने पिछले दौरों में ओपनिंग के अलावा नंबर-3 पर भी बल्लेबाजी की है पर रोहित के न होने के कारण वह यशस्वी जायसवाल के साथ पारी शुरु भी कर सकते हैं। शुभमन ने उस पल को भी याद किया, जब उन्हें पहली बार टेस्ट टीम का कप्तान बनाए जाने की खबर मिली थी। उन्होंने कहा, जब पता चला कि मुझे इस तरह का अवसर मिलेगा, तो मैं बहुत उत्साहित था। यह अनुभव काफी उत्साहजनक था पर साथ ही मुझे लगता है कि यह एक बड़ी जिम्मेदारी है। साथ ही कहा कि हमने अभी तक बल्लेबाजी क्रम को लेकर कोई फैसला नहीं किया है, बहरहाल टीम इस दौरे में अच्छे प्रदर्शन के लिए पूरी तरह से तैयार है।

छह तस्करों सहित पुलिस ने 455 बकरे-भेड़ों से भरा ट्रक किया जब्त

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले की बिछिया पुलिस ने रविवार देर रात नागपुर की पशु मंडी ले जाए जा रहे 455 बकरे-बकरियों और भेड़ों से भरे एक ट्रक को जब्त कर छह तस्करों को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई आईजी गौरव राजपूत के निर्देश पर की गई।

बिछिया टीआई मनीषा उपाध्याय ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने वाहन को जब्त कर लिया। आरोपियों से पशुओं के खरीद-फरोख्त और परिवहन संबंधी दस्तावेज मांगे गए, लेकिन वे प्रस्तुत नहीं कर पाए। बरामद किए गए सभी पशुओं को गोशाला भेज दिया गया है।

गिरफ्तार आरोपियों में मोहम्मद असलम (30) पिता जकीर हुसैन निवासी बेलहा, इंसाफ मोहम्मद (34) पिता मरहूम दीन मोहम्मद निवासी बेलहा थाना चुरहट, वनस्पति यादव पिता जगन्नाथ यादव निवासी सतरोही थाना रामपुर नैकिन, मोहम्मद सहवाज (18) पिता मोहम्मद मूसा निवासी सतरोही, मोहम्मद रसीद (35) पिता मोहम्मद जमीर निवासी सतरोही और अरुण सिंह (26) पिता बबलू सिंह गोड निवासी हनुमानगढ़ थाना चुरहट शामिल हैं।

इससे पहले चोरहटा थाने की पुलिस ने भी एक पशु तस्कर का वाहन जब्त किया था, जिसके बाद तस्कर ने दस्तावेज प्रस्तुत न कर पाने पर पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए थे।

सतना के गहरानाला में टायर गोदाम में आग, 6 दमकल गाड़ियों ने सवा घंटे में पाया काबू

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना शहर के गहरानाला इलाके में सोमवार शाम एक टायर गोदाम में आग लग गई। आग इतनी तेज थी कि मौके पर पहले 4 और फिर 2 दमकल गाड़ियां बुलानी पड़ीं। करीब सवा घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

घटना शाम करीब 5 बजे की है। गहरानाला इलाके में लकी मोंगिया की टायर गोदाम है, जहां पुराने टायरों में रबड़िंग का काम होता है। इसी गोदाम में अचानक आग लग गई। सूचना मिलते ही नगर निगम की दमकल टीम चार गाड़ियों के साथ मौके पर पहुंची।

घटना स्थल पर धुआं इतना घना था कि आग बुझाने में दिक्कतें आईं। बाद में दो और दमकल गाड़ियां बुलाई गईं। कुल 6 गाड़ियों की मदद से करीब सवा घंटे में आग पर काबू पाया गया। कोलगवां थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आसपास की दुकानों को खाली कराया और गोदाम के पास खड़े वाहनों को हटवाया।

रिहायशी क्षेत्र में चल रही थी गोदाम, तीसरी ऐसी घटना: यह गोदाम रिहायशी इलाके में स्थित है। जानकारी के मुताबिक, सतना शहर में टायर गोदाम में आग लगने की यह तीसरी घटना है। इससे पहले कोलगवां थाना क्षेत्र के बदखर इलाके और शुक्ला बरदाडीह में भी इसी तरह की आगजनी हो चुकी है। फिलहाल किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। प्रशासन द्वारा जांच की जा रही है।

सतना में ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटी, 9 साल की बच्ची समेत दो की मौत

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के रामपुर बघेलान थाना क्षेत्र में सोमवार शाम एक भीषण सड़क हादसा हो गया। बीरनई नाद बाबा के पास एक ट्रैक्टर-ट्रॉली पलट गई, जिसमें 9 वर्षीय रचना केवट और 35 वर्षीय केमली केवट की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में दो दर्जन से अधिक लोग घायल हुए हैं, जिनमें अधिकांश महिलाएं और बच्चे शामिल हैं।

भंडारे से लौटते वक्त हुआ हादसा: ट्रैक्टर-ट्रॉली में ग्राम गहलोखरी के केवट समाज के लोग सवार थे, जो मझियार के पास बीरनई नाद बाबा में भंडारे के कार्यक्रम में शामिल होकर वापस लौट रहे थे। लौटते वक्त ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर पलट गई। मृतकों की पहचान रचना केवट, उम्र 9 वर्ष, मर्यादपुर, मैहर और केमली केवट, उम्र 35 वर्ष, ताला गांव, मैहर के रूप में हुई है।

पुलिस ने घायलों को जिला अस्पताल भेजा: रामपुर बघेलान पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सभी घायलों को जिला अस्पताल भिजवाया। दोनों मृतकों के शव को रामपुर बघेलान मॉर्चुरी भेज दिया गया है। हादसे के पीछे ओवरलोडिंग और ट्रैक्टर-ट्रॉली का असंतुलन एक बड़ा कारण माना जा रहा है।

ट्रॉली से यात्री ढोने पर रोक लगे: स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की हैं कि यात्रियों को ढोने के लिए ट्रैक्टर-ट्रॉली के इस्तेमाल पर रोक लगे, ताकि भविष्य में इस तरह के हादसों को रोका जा सके।

जमीनी विवाद में दो पक्षों के बीच झड़क के बाद चली गोली

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के सेमरिया थाना क्षेत्र के हिनौता गांव में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में झड़प हो गई। विवाद के दौरान एक पक्ष ने दूसरे पक्ष पर गोली चला दी। गनीमत रही कि गोली जमीन में जा लगी और कोई हताहत नहीं हुआ। रविवार को हुई इस घटना का सीसीटीवी फुटेज सोमवार को सामने आया।

एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया कि मामले में दोनों पक्षों से दो-दो आरोपी बनाए गए हैं। एक पक्ष से अरुणेंद्र पाठक और प्रत्युष, जबकि दूसरे पक्ष से राजेश कुमार सिंह और विकास कुमार सिंह को आरोपी बनाया गया है। दोनों परिवारों के बीच लंबे समय से जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। रविवार को हुए विवाद में एक पक्ष ने दूसरे पक्ष पर बंदूक से गोली चलाकर जानलेवा हमला करने का प्रयास किया। मौके पर मौजूद लोगों ने बंदूक लिए शख्स को रोकने का प्रयास किया, लेकिन वह विवाद करता रहा। घटना पास में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच शुरू कर दी है।

उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश के अधिकारियों ने बाढ़ नियंत्रण के लिए किया विचार मंथन

वर्षा से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियाँ तत्काल उपलब्ध कराएं - कमिश्नर रीवा

बांधों के भरने के प्रोटोकाल का पूरी तरह से पालन होगा - कमिश्नर मिर्जापुर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले के त्योंथर क्षेत्र में बाढ़ की समस्या से निपटने के लिए मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के वरिष्ठ प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से विचार मंथन किया। कमिश्नर कार्यालय के एनआईसी केन्द्र से कमिश्नर रीवा बीएस जामोद ने कहा कि मध्यप्रदेश की टमस तथा उत्तरप्रदेश की बेलन नदियों के जल क्षेत्र में लगातार भारी वर्षा होने पर त्योंथर क्षेत्र में बाढ़ का खतरा उत्पन्न हो जाता है। बाढ़ से बचाव और स्थिति पर नियंत्रण के लिए दोनों राज्यों के अधिकारी वर्षा से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियाँ तत्काल एक-दूसरे को उपलब्ध कराएं। बाढ़ नियंत्रण से संबंधित कंट्रोल रूम तत्काल शुरू कर दें। बाढ़ नियंत्रण से जुड़े प्रशासनिक तथा पुलिस अधिकारियों एवं जल संसाधन विभाग के अधिकारियों के व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर फोन नम्बर अपडेट कर लें। लगातार वर्षा की स्थिति में बांधों के जल स्तर तथा वर्षा की मात्रा के संबंध में हर घंटे जानकारी साझा करें। लगातार सम्पर्क और समन्वय से किसी भी आपात स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास करें। जल प्रबंधन की कमी के कारण किसी भी क्षेत्र में बाढ़ का प्रकोप नहीं होना चाहिए।

बैठक में वीडियो कान्फ्रेंसिंग से शामिल कमिश्नर मिर्जापुर बीके त्रिपाठी ने कहा कि सिंचाई के लिए बांधों में पानी के संग्रहण के साथ-साथ आमजनता को बाढ़ से सुरक्षित रहने पर भी पूरा ध्यान दिया जाएगा। मेजा, सिरसी तथा अदवा बांधों में जल भराव में जल संसाधन विभाग के निर्धारित प्रोटोकाल का पूरी तरह से पालन किया जाएगा। बांधों से यदि आपात स्थिति में पानी छोड़ने की आवश्यकता हुई तो निचले इलाकों में समय पर सूचना दी जाएगी। दोनों राज्यों के अधिकारी टमस नदी के जल प्रवाह और बेलन नदी के जल प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए समन्वय से प्रयास करेंगे। हम त्योंथर क्षेत्र में बाढ़ न आए इसके लिए पूरी सावधानी बरतेंगे। वर्षा की स्थिति और अनुमानों के आधार पर बाढ़ से जुड़े आवश्यक प्रबंध किए जाएंगे। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ मैदानी अमला भी एक-दूसरे के साथ सतत संपर्क में रहेगा।

बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा कि टमस एक्वाडक्ट और बियर बांध में अधिक मात्रा में पानी आने पर टमस नदी के जलग्रहण क्षेत्र में जल स्तर में तेजी से वृद्धि होती है और त्योंथर क्षेत्र के 100 से अधिक गांवों में बाढ़ का खतरा पैदा हो जाता है। इस बियर बांध से जल निकासी की समुचित प्रबंधों की आवश्यकता है। जल संसाधन विभाग के अधिकारी एक-दूसरे के संपर्क में रहकर सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं समय पर दें तथा कंट्रोल रूम को भी लगातार स्थिति से अवगत कराएं। बैठक में चीफ इंजीनियर जल संसाधन विभाग अशोक कुमार डेहरिया ने कहा कि गत वर्षों के अनुभव तथा वर्षा की स्थिति के अनुसार बाढ़ नियंत्रण की कार्ययोजना तैयार की गई है। इससे जुड़े अधिकारियों के फोन नम्बर का व्हाट्सएप ग्रुप बना लिया गया है। अदवा, सिरसी और मेजा बांधों को भरने के प्रोटोकाल का यदि पालन करेंगे तो बाढ़ की स्थिति नहीं आएगी। बांधों को अधिकतम स्तर में भरने के लिए वर्षा के अंतिम चरण तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। टमस और बेलन नदी के जल ग्रहण क्षेत्रों में लगातार भारी बारिश होने पर दोनों राज्यों के अधिकारी बांधों से पर्याप्त अंतराल से पानी छोड़कर बाढ़ की स्थिति पर बहुत हद तक नियंत्रण कर सकते हैं। उन्होंने बाढ़ से निपटने के लिए किए गए प्रबंधों की बिन्दुवार जानकारी दी। बैठक में अपर कमिश्नर नीतू माथुर, पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, कार्यपालन यंत्री मनोज तिवारी, उपायुक्त श्रेयस गोखले, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, कार्यपालन यंत्री अमरदीप त्रिपाठी, संभागीय कमाण्डेंट होमगार्ड महेशचन्द्र पंद्रे तथा जल संसाधन विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से सोनभद्र, मिर्जापुर जिलों के प्रशासनिक, पुलिस और जल संसाधन विभाग के अधिकारी बैठक में शामिल हुए।

रोजगार मेला 16 जून को रीवा में

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। युवा संगम कार्यक्रम के तहत महावीर आईटीआई रीवा में 16 जून को सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक रोजगार मेला आयोजित किया जायेगा। रोजगार मेले में जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को विभिन्न कंपनियों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 12 कंपनियों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों में युवक एवं युवतियों की आयु सीमा तथा शैक्षणिक योग्यता अलग-अलग निर्धारित की गई है। वेतन एवं भत्ते 8500 रुपए से 25 हजार रुपए तक निर्धारित किया गया है। वेतन एवं भत्ता विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग देय होगा। युवाओं को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, रोजगार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा। उप संचालक ने बताया कि रोजगार मेले में अलर्ट एसजीएस प्रा. लि. रायपुर छत्तीसगढ़, आमधनी प्रा. लि. एमआरएफ टायर्स गुजरात, अपोलो टायर्स याजाकी धूत ट्रांसमिशन गुजरात, एल एण्ड टी कंस्ट्रक्शन कांचीपुरम, शक्ति पंप इंडिया लि. पीथमपुर धार, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा नासिक महाराष्ट्र, प्रगतिशील एग्रोटेक प्रा. लि. रीवा, एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेन्स कंपनी लिमि. रीवा, प्रगतिशील बायोटेक प्रा. लि. रीवा, भारती एक्सा लाईफ इंश्योरेंस प्रा. लि. रीवा, ग्रेट आर्ग्रेनिक डायमंड कंपनी लि. सागर तथा स्वतंत्र माइक्रोफिन प्रा. लि. भोपाल में रोजगार के अवसर उपलब्ध रहेंगे।

दहेज प्रताड़ना केस वापस नहीं लेने पर पति ने किया हमला

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के उचेहरा थाना क्षेत्र में रविवार सुबह एक महिला पर उसके पति ने लाठी से हमला कर दिया। महिला प्रभा सेन पहले से दहेज प्रताड़ना के केस में अपने पति के खिलाफ शिकायत कर चुकी थी। परिजनों का आरोप है कि केस वापस न लेने पर हमला किया गया।

घटना के बाद प्रभा सेन को पहले उचेहरा अस्पताल ले जाया गया, जहां से हालत बिगड़ने पर उन्हें सतना जिला अस्पताल रेफर किया गया।

प्रभा सेन की शादी छह साल पहले विनय सेन से हुई थी। परिजनों के मुताबिक, विवाद की वजह प्रभा के पिता श्यामलाल सेन की सरकारी नौकरी और उसकी सैलरी थी। ससुराल पक्ष प्रभा से दुकान खोलने के लिए पैसे मांगता था। मना करने पर मारपीट की जाती थी।

रिकॉर्ड करना चाहता था सुलह की बात: प्रभा के परिवार ने बताया, 15 मई को विनय सेन उसे मायके से वापस ले गया था। 9 जून की सुबह वह प्रभा से सुलह की बात कहलवाने के लिए दबाव बना रहा था और इसकी रिकॉर्डिंग भी करना चाहता था। जब प्रभा ने मना कर दिया, तो उस पर लाठी से हमला कर दिया।

प्रभा की बहन अलंकृता सेन ने बताया, जब मैंने बीच-बचाव किया, तो मुझे जान से मारने की धमकी दी गई। ससुर रामकिशोर सेन, जेठ विनोद सेन, पति विनय सेन और देवर रामानंद सेन सुबह से केस वापस लेने का दबाव बना रहे थे।

पुलिस ने शुरू की जांच: टीआई सतीश मिश्रा ने बताया, घायल का कथन लेते हुए मामला कायम कर विवेचना शुरू कर दी गई है।

पहले भी दर्ज हो चुकी थी शिकायत: प्रभा ने पहले थाने में शिकायत की थी, जो बाद में कोर्ट तक पहुंची। रविवार की घटना उसी केस को वापस न लेने की वजह से हुई। इस घर में प्रभा की बहन अलंकृता की भी शादी हुई है।

नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पीएम जवाहर नवोदय विद्यालय सिरमौर में शिक्षा सत्र 2026-27 में कक्षा 6 में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 31 मई से प्रारंभ हो चुकी है। ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई निर्धारित की गई है। इच्छुक विद्यार्थी किसी भी ऑनलाइन सेंटर अथवा मोबाइल के माध्यम से प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन कर सकता है। इस संबंध में विद्यालय के प्राचार्य मनीष तिवारी ने बताया कि विद्यार्थी को रीवा अथवा मऊगंज जिले के शासकीय विद्यालय अथवा मान्यता प्राप्त अशासकीय विद्यालय में कक्षा 5 में अध्ययरत एवं रीवा अथवा मऊगंज जिले का निवासी होना चाहिए। विद्यार्थी ने कक्षा 3 और 4 की निरंतर पढ़ाई शासकीय अथवा मान्यता प्राप्त अशासकीय विद्यालय से पूर्ण शिक्षण सत्र में उत्तीर्ण की हो तथा वर्तमान में कक्षा 5 में अध्ययनरत हो। विद्यार्थी 29 जुलाई तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। कक्षा में आगामी सत्र में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा 13 दिसम्बर को रीवा और मऊगंज जिले के सभी विकासखण्ड मुख्यालय में आयोजित की जाएगी। इसके आधार पर तैयार मेरिट सूची के अनुसार विद्यार्थियों को कक्षा 6 में प्रवेश दिया जाएगा। इस संबंध में अन्य जानकारियाँ और विवरण नवोदय डॉट जीओभी डॉट इन लिंक पर भी प्राप्त की जा सकती हैं। इसका आवेदन पत्र वेबसाइट सीबीएसईआईटीएमएस डॉट आरईआईएल डॉट जीओभी डॉट इन पर किया जा सकता है।

प्रशिक्षण कार्यशाला 12 जून को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर रीवा संभाग बीएस जामोद के निर्देश पर अनुसूचित जाति, जनजाति बालक एवं बालिका छात्रावास/आश्रम के अधीक्षक/संचालक की प्रशिक्षण कार्यशाला 12 जून को आयोजित की गई है। जिला संयोजक अनुसूचित जाति जनजातीय कार्य विभाग ने स्टार होटल में प्रातः 10 बजे से शाम 6 बजे तक आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला में संबंधितों को अनिवार्यतः उपस्थिति के निर्देश दिये है।

मैहर में भाई के साथ खेल रही बच्ची की नहर में गिरने से मौत

मैहर (एजेंसी)। मैहर के हरदासपुर गांव में रविवार शाम 6 बजे 14 वर्षीय प्रियंका सिंह की नहर में डूबने से मौत हो गई। प्रियंका अपने छोटे भाई के साथ घर के पास खेल रही थी। सोमवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा गया। दोपहर 12 बजे परिजनों ने डेल्हा ग्राम तिराहे पर शव रखकर सड़क जाम कर दिया। उन्होंने नहर निर्माण एजेंसी पर लापरवाही का आरोप लगाया।घटना उस समय हुई जब वह घर से महज 100 फीट दूर नहर के किनारे पहुंच गई। वहां उसका पैर फिसल गया। नहर के पास काम कर रहे कर्मचारियों ने बच्ची को डूबते देखा और उसे बचाने का प्रयास किया। कर्मचारियों ने प्रियंका को नहर से बाहर निकाला। उसकी हालत गंभीर थी। उसे तुरंत मैहर सिविल अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया।

बीहर नदी में कांग्रेस नेताओं ने किया जल सत्याग्रह

भ्रष्टाचार और फर्जी नियुक्तियों के खिलाफ आंदोलन, सरकार को दी उग्र आंदोलन की चेतावनी

रीवा (एजेंसी)। रीवा में कांग्रेस पदाधिकारी सोमवार से जल सत्याग्रह कर रहे हैं। इस आंदोलन के जरिए कांग्रेस सरकार पर भ्रष्टाचार और जनहित से जुड़े कई मुद्दों पर हमला बोल रही है। कांग्रेस नेताओं का कहना है कि यह सत्याग्रह रीवा में व्याप्त भ्रष्टाचार, संस्थाओं को समय पर भुगतान न होने, अधिकारियों की फर्जी मार्कशीट के आधार पर नौकरी पाने, बेशकीमती जमीनों की औने-पौने दाम में बिक्री जैसे गंभीर मामलों को लेकर किया जा रहा है। कांग्रेस प्रवक्ता विनोद शर्मा ने कहा कि रीवा में ऐसा कोई विभाग नहीं बचा है जहां भ्रष्टाचार न हो। भ्रष्ट अधिकारियों को सत्ता में बैठे लोग संरक्षण दे रहे हैं। इन्हीं सब मामलों को लेकर आज बीहर नदी के बाबा घाट पर जल सत्याग्रह किया गया।

सरकार को जिम्मेदारी याद दिलाने का प्रयास: कांग्रेस नेताओं ने कहा कि इस सत्याग्रह का उद्देश्य सरकार और प्रशासन को उनकी जिम्मेदारी याद दिलाना है। यह संकेतात्मक जल सत्याग्रह दोपहर से शाम तक चला। कार्यक्रम में कार्यकारी अध्यक्ष कुँवर सिंह, जिला उपाध्यक्ष व पूर्व पार्षद अरुण तिवारी मुन्नू, वरिष्ठ नेता संजय गौतम (कमांडो), अरुण गौतम, अनुसूचित जाति जिला अध्यक्ष हेमराज साकेत, आदिवासी नेता रामकलेश कोल, गणेश सिंह, विनय सोनकर, अभिमन्यु त्रिपाठी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे। आंदोलन के दौरान सभी नेताओं ने एक सुर में सभी मुद्दों के समाधान की मांग की और चेतावनी दी कि यदि मांगे नहीं मानी गई तो आंदोलन उग्र रूप ले सकता है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।